NATIONAL TESTING AGENCY(NTA)

UGC 2026

NET/SET/JRF

हिन्दी

13 वर्ष (2014 - जनवरी 2026)

प्रस्तुत पुस्तक में विगत वर्ष के प्रश्नों को विषयवार विस्तृत व्याख्या के साथ हल किया गया है।

पेपर-2

IfAS | IFAS Publications

Copyright 2026, IFAS Publications

All rights reserved. No part of this publication or the information contained herein may be reproduced, adapted, abridged, translated, stored in a retrieval system, computer system, photographic or other systems or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, optical, digital, by photocopying, recording or otherwise, without written prior permission from the publisher. Any breach will attract legal action and prosecution without further notice.

Disclaimer: While every effort has been made to avoid errors and omissions, this publication is being sold and marketed on the understanding and presumption that neither the editors (or authors) nor the publishers nor the printers would be liable in any manner whatsoever, to any person either for an error or for an omission in this publication, or for any action to be taken on the basis of this work. Any inadvertent discrepancy noted may be brought to the attention of the publisher, for rectifying it in future editions, if published.

This book contains information obtained from authentic and highly regarded sources. Reasonable efforts have been made to publish reliable data and information, but the editors and publisher cannot assume responsibility for the validity of all materials or the consequences of their use. The editors and publisher have attempted to trace and acknowledge the copyright holders of all material reproduced in this publication and apologize to copyright holders if permission and acknowledgement to publish in this form have not been obtained. If any copyright material has not been acknowledged please write and let us know so that we may rectify it.

Trademark Notice: Publications or corporate names may be trademarks, and are used only for identification and explanation in bonafide intent without intent to infringe.

Designed and Published by:
IFAS Publications

Address:
Shivranjan Complex,
Someshwar Wadi, Near
Rajwada Hotel, Baner Road,
Pune 411 008.

Contact No.: +91-960 489 7388

Website: https://ifasonline.com

Price: ₹ 895.00

ISBN: 978-81-973550-3-5

भूमिका

हमें अत्यंत हर्ष है कि हम आपके समक्ष **यूजीसी-नेट हिंदी परीक्षा की वस्तुनिष्ठ पुस्तक** प्रस्तुत कर रहे हैं, जो **पिछले 13 वर्षों के यूजीसी-नेट हिंदी के प्रश्नों** का विस्तृत समाधान प्रस्तुत करने वाली अध्ययन-सामग्री का एक संकलन है। यह पुस्तक उन अभ्यर्थियों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई है जो **यूजीसी-नेट हिंदी परीक्षा** में **जेआरएफ (JRF) या सहायक प्राध्यापक (Assistant Professorship)** के लिए सफलता प्राप्त करने का लक्ष्य रखते हैं।

यूजीसी-नेट हिंदी परीक्षा में **भाषा-विज्ञान, व्याकरण, साहित्य का आरंभ से लेकर अद्यतन तक का इतिहास, विविध-विधाओं (जैसे- काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, आलोचना, निबंध आदि), पत्रकारिता व काव्यशास्त्र** आदि की समझ आवश्यक होती है। इसी को ध्यान में रखते हुए, इस पुस्तक में **प्रत्येक प्रश्न को विषयवार (Topic-wise) क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है**, जिससे परीक्षार्थी **अपनी अध्ययन रणनीति को सुव्यवस्थित कर सकें** और परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रवृत्ति से भली-भांति परिचित हो सकें।

पुस्तक की मुख्य विशेषताएँ:

- **13 वर्षों के हल प्रश्नपत्र:** पिछले (2014-2026 [JAN]) **13 वर्षों के यूजीसी-नेट हिंदी परीक्षा प्रश्नों** को शामिल किया गया है, जिससे छात्र परीक्षा के प्रश्न-पैटर्न तथा प्रश्नों के स्तर को समझ सकें।
- **विषयवार प्रश्न-संग्रह:** सभी प्रश्नों को **विषयवार** व्यवस्थित किया गया है, जिससे परीक्षार्थी अपनी तैयारी को लक्ष्य आधारित बना सकें और **विशिष्ट विषयों** पर गहन अध्ययन कर सकें।
- **विस्तृत समाधान:** प्रत्येक प्रश्न के साथ उसका **विस्तृत समाधान** दिया गया है, जिसमें संबंधित साहित्यिक, भाषिक तथा व्याकरणिक अवधारणाओं (Concepts) की गहराई से व्याख्या की गई है। यह न केवल सही उत्तर की व्याख्या करता है, बल्कि विषय की **समझ और विश्लेषणात्मक क्षमता** को भी मजबूत बनाता है।

यह पुस्तक केवल प्रश्नों के अभ्यास का माध्यम ही नहीं है, बल्कि यह **हिंदी साहित्य से जुड़े अन्य विषय** जैसे **काव्यशास्त्र, व्याकरण, वैचारिक प्रष्ठभूमि, हिंदी पत्रकारिता** तथा **टेक्स्ट-भाग** आदि की भी ठोस नींव तैयार करने में सहायक होगी। इस संरचित पद्धति से **विश्लेषणात्मक क्षमता** का विकास होगा, जो इस परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक **आपकी यूजीसी-नेट हिंदी परीक्षा की तैयारी में एक अनिवार्य साधन** सिद्ध होगी और आपकी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। **निरंतर अध्ययन और नियमित अभ्यास** से आप परीक्षा की सभी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए पूर्णतः तैयार होंगे।

✨ **आपकी सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ!** ✨

यूजीसी नेट परीक्षा पैटर्न

पेपर	पेपर 1	पेपर 2
विषय	सामान्य	आवेदक के द्वारा चुना गया विषय
प्रश्नों की संख्या	50	100
कुल अंक	100	200
समय अवधि	3 घंटे	
परीक्षा का माध्यम	ऑनलाइन	
निगेटिव मार्किंग	गलत उत्तर के लिए नंबर नहीं काटे जाएंगे।	

कटऑफ

वर्ष	कैटेगरी	सामान्य	ओबीसी	ईडब्लूएस	एससी	एसटी	पीडब्ल्यूडी
2025 जून	सहायक प्राध्यापक	190	172	174	160	152	150
	जेआरएफ & सहायक प्राध्यापक	218	208	210	194	182	194
***2024 जून**	सहायक प्राध्यापक	97.32	92.55	93.35	86.49	82.03	75.54
	जेआरएफ & सहायक प्राध्यापक	99.77	99.42	99.44	98.04	95.88	99.24
2023 दिसम्बर	सहायक प्राध्यापक	160	144	148	136	132	130
	जेआरएफ & सहायक प्राध्यापक	184	170	178	160	156	166
***2023 जून**	सहायक प्राध्यापक	97.31	92.52	92.86	84.98	80.12	49.73
	जेआरएफ & सहायक प्राध्यापक	99.59	98.82	99.22	96.56	93.67	97.31
***2021 दिसम्बर / 2022 जून**	सहायक प्राध्यापक	96.82	91.10	92.24	82.68	79.09	79.09
	जेआरएफ & सहायक प्राध्यापक	99.27	97.91	98.47	93.27	93.27	96.82

(* - परसेंटाइल के रूप में कटऑफ को दर्शाता है)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नेट-ब्यूरो

विषय – हिन्दी **Code No. 20**

पाठ्यक्रम

इकाई - I

हिन्दी भाषा और उसका विकास।

हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएं, मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएं-पालि, प्राकृत – शौरसेनी, अर्द्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएं, अपभ्रंश अवहठ, और पुरानी हिन्दी का संबंध, आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएं और उनका वर्गीकरण | हिन्दी का भौगोलिक विस्तार : हिन्दी की उपभाषाएं, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी वर्ग और उनकी बोलियां। खड़ीबोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएं । हिन्दी के विविध रूप : हिन्दी, उर्दू, दक्खिनी, हिन्दुस्तानी | हिन्दी का भाषिक स्वरूप : हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था खंड्य और खंड्येतर, हिन्दी ध्वनियों के वर्गीकरण का आधार, हिन्दी शब्द रचना - उपसर्ग, प्रत्यय, समास, हिन्दी की रूप रचना - लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया रूप, हिन्दी - वाक्य - रचना | हिन्दी भाषा - प्रयोग के विविध रूप : बोली, मानक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और सम्पर्क भाषा । संचार माध्यम और हिन्दी, कम्पूटर और हिन्दी, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति। देवानागरी लिपि : विशेषताएं और मानकीकरण।

इकाई - II

हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्येतिहास दर्शन

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की पद्धतियां

हिन्दी साहित्य का कालविभाजन और नामकरण, आदिकाल की विशेषताएं एवं साहित्यिक प्रवृतियां, रासो-साहित्य, आदिकालीन हिन्दी का जैन साहित्य, सिद्ध और नाथ साहित्य, अमीर खुसरो की हिन्दी कविता, विद्यापति और उनकी पदावली तथा लौकिक साहित्य

भक्तिकाल

भक्ति-आंदोलन के उदय के सामाजिक-सांस्कृतिक कारण, भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरुप और उसका अन्तः प्रादेशिक वैशिष्ट्य ।

भक्ति काव्य की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आलवार सन्त। भक्ति काव्य के प्रमुख सम्प्रदाय और उनका वैचारिक आधार । निर्गुण-सुगण कवि और उनका काव्य।

रीतिकाल

सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्टभूमि, रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियां (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त)

रीतिकवियों का आचार्यत्व।

रीतिकाल के प्रमुख कवि और उनका काव्य

आधुनिक काल

हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास। भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य, 1857 की क्रान्ति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, भारतेन्दु और उनका युग, पत्रकारिता का आरम्भ और 19वीं शताब्दी की हिन्दी पत्रकारिता, आधुनिकता की अवधारणा ।

द्विवेदी युग : महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, हिन्दी नवजागरण और सरस्वती, राष्ट्रीय काव्य धारा के प्रमुख कवि, स्वछन्दतावाद और उसके प्रमुख कवि ।

छायावाद : छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएं, छायावाद के प्रमुख कवि, प्रगतिवाद की अवधारणा, प्रगतिवादी काव्य और उसके प्रमुख कवि, प्रयोगवाद और नई कविता, नई कविता के कवि, समकालीन कविता (वर्ष 2000 तक) समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता।

हिन्दी साहित्य की गद्य विधाएं

हिन्दी उपन्यास : भारतीय उपन्यास की अवधारणा । प्रेमचन्द पूर्व उपन्यास, प्रेमचन्द और उनका युग । प्रेमचन्द के परवर्ती उपन्यासकार (वर्ष 2000 तक)।

हिन्दी कहानी : हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास, 20वीं सदी की हिन्दी कहानी और प्रमुख कहानी आंदोलन एवं प्रमुख कहानीकार ।

हिन्दी नाटक : हिन्दी नाटक और रंगमंच, विकास के चरण, भारतेन्दुयुग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग और नया नाटक प्रमुख नाट्यकृतियाँ, प्रमुख नाटककार (वर्ष 2000 तक)।

हिन्दी एकांकी | हिन्दी रंगमंच और विकास के चरण, हिन्दी का लोक रंगमंच । नुक्कड़ नाटक |

हिन्दी निबंध : हिन्दी निबन्ध का उद्भव और विकास, हिन्दी निबंध के प्रकार और प्रमुख निबंधकार ।

हिन्दी आलोचना- हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास। समकालीन हिन्दी आलोचना एवं उसके विविध प्रकार। प्रमुख आलोचक।

हिन्दी की अन्य गद्य विधाएँ : रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा साहित्य, आत्मकथा, जीवनी और रिपोर्ताज, डायरी।

हिन्दी का प्रवासी साहित्य : अवधारणा एवं प्रमुख साहित्यकार।

इकाई - III

साहित्यशास्त्र

काव्य के लक्षण, काव्य हेतु और काव्य प्रयोजन।

प्रमुख संप्रदाय और सिद्धान्त - रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य ।

रस निष्पत्ति, साधारणीकरण।

शब्दशक्ति, काव्यगुण, काव्य दोष

प्लेटो के काव्य सिद्धान्त।

अरस्तू : अनुकरण सिद्धान्त, त्रासदी विवेचन, विरेचन सिद्धान्त।

वर्ड्सवर्थ का काव्यभाषा सिद्धान्त ।

कॉलरिज : कल्पना और फैंटेसी ।

टी. एस. इलिएट : निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त, परम्परा की अवधारणा।

आई.ए.रिचर्ड्स : मूल्य सिद्धान्त, संप्रेषण सिद्धान्त तथा काव्य-भाषा सिद्धान्त। रूसी रूपवाद।

नयी समीक्षा। मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक, बिम्ब ।

इकाई – IV

वैचारिक पृष्ठभूमि

भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आन्दोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि

हिन्दी नवजागरण | खड़ीबोली आन्दोलन । फोर्ट विलियम कॉलेज

भारतेन्दु और हिन्दी नवजागरण,

महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण

गांधीवादी दर्शन

अम्बेडकर दर्शन

लोहिया दर्शन

मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, उत्तर आधुनिकतावाद, अस्मितामूलक विमर्श
(दलित, स्त्री, आदिवासी एवं अल्पसंख्यक)

इकाई - V

हिन्दी कविता

पृथ्वीराज रासो - रेवा तट

अमीरखुसरो - खुसरों की पहेलियाँ और मुकरियाँ

विद्यापति की पदावली (संपादक - डॉ. नरेन्द्र झा) - पद संख्या 1 - 25

कबीर - (सं.- हजारी प्रसाद द्विवेदी) - पद संख्या - 160-209

जायसी ग्रंथावली – (सं. राम चन्द्र शुक्ल) - नागमती वियोग खण्ड

सूरदास – भ्रमरगीत सार - (सं . - राम चन्द्र शुक्ल) - पद संख्या 21 से 70

तुलसीदास - रामचरितमानस, उत्तर काण्ड

बिहारी सतसई - (सं.- जगन्नाथ दास रत्नाकर) - दोहा संख्या 1-50

घनानन्द कवित्त – (सं.- विश्वनाथ मिश्र) – कवित्त संख्या 1 - 30

मीरा - (सं.- विश्वनाथ त्रिपाठी) - प्रारम्भ से 20 पद

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध - प्रियप्रवास

मैथिलीशरण गुप्त – भारत भारती, साकेत (नवम् सर्ग)

जयशंकर प्रसाद – आंसू, कामायनी (श्रद्धा, लज्जा, इड़ा)

निराला - जुही की कली, जागो फिर एक बार, सरोजस्मृति, राम की शक्तिपूजा, कुकरमुत्ता, बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु।

सुमित्रानंदन पंत -परिवर्तन, प्रथम रश्मि

महादेवी वर्मा - बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, मै नीर भरी दुख की बदली, फिर विकल है प्राण मेरे, यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र

रामधारी सिंह दिनकर - उर्वशी (तृतीय अंक), रश्मिरथी

नागार्जुन - कालिदास, बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, खुरदरे पैर, शासन की बंदूक, मनुष्य हूँ ।

सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय - कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला, हरी घास पर क्षण भर, असाध्यवीणा, कितनी नावों में कितनी बार

भवानीप्रसाद मिश्र - गीत फरोश, सतपुड़ा के जगल

मुक्तिबोध - भूल गलती, ब्रह्मराक्षस, अंधेरे में

धूमिल - नक्सलवाड़ी, मोचीराम, अकाल दर्शन, रोटी और संसद

इकाई - VI

हिन्दी उपन्यास

पं. गौरीदत्त - देवरानी जेठानी की कहानी
लाला श्रीनिवास दास - परीक्षा गुरू
प्रेमचन्द – गोदान
अज्ञेय - शेखर एक जीवनी (भाग - 1)
हजारी प्रसाद द्विवेदी - बाणभट्ट की आत्मकथा
फणीश्वर नाथ रेणु – मैला आंचल
यशपाल - झूठा सच
अमृत लाल नागर मानस का हंस
भीष्म साहनी - तमस
श्रीलाल शुक्ल – राग दरबारी
कृष्णा सोबती – जिन्दगी नामा
मन्नू भंडारी – आपका बंटी
जगदीश चन्द्र - धरती धन न अपना

इकाई - VII

हिन्दी कहानी

राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला) - चन्द्रदेव से मेरी बातें, दुलाईवाली
माधवराव सप्रे – एक टोकरी भर मिट्टी
सुभद्रा कुमारी चौहान - राही
प्रेमचंद - ईदगाह, दुनिया का अनमोल रतन
राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह - कानों में कंगना
चन्द्रधर शर्मा गुलेरी – उसने कहा था
जयशंकर प्रसाद - आकाशदीप
जैनेन्द्र – अपना-अपना भाग्य
फणीश्वरनाथ रेणु - तीसरी कसम, लाल पान की बेगम
अज्ञेय - गैंग्रीन
शेखर जोशी – कोसी का घटवार
भीष्म साहनी - अमृतसर आ गया है, चीफ की दावत
कृष्णा सोबती - सिक्का बदल गया
हरिशंकर परसाई – इस्पेक्टर मातादीन चांद पर
ज्ञानरंजन – पिता
कमलेश्वर - राजा निरबंसिया
निर्मल वर्मा - परिंदे

इकाई – VIII

हिन्दी नाटक

भारतेन्दु – अंधेर नगरी, भारत दुर्दशा
जयशंकर प्रसाद – चन्द्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी
धर्मवीरभारती - अंधायुग
लक्ष्मीनारायण लाल – सिंदूर की होली
मोहन राकेश - आधे-अधूरे, आषाढ़ का एक दिन
हबीब तनवीर - आगरा बाज़ार
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - बकरी
शंकरशेष - एक और द्रोणाचार्य
उपेन्द्रनाथ अश्क - अंजो दीदी
मन्नू भंडारी - महाभोज

इकाई - IX

हिन्दी निबंध

भारतेन्दु - दिल्ली दरबार दर्पण, भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है
प्रताप नारायण मिश्र - शिवमूर्त्ति
बाल कृष्ण भट्ट – शिवशंभु के चिट्ठे
रामचन्द्र शुक्ल – कविता क्या है
हजारी प्रसाद द्विवेदी - नाखून क्यों बढ़ते हैं
विद्यानिवास मिश्र - मेरे राम का मुकुट भीग रहा है
अध्यापक पूर्ण सिंह - मजदूरी और प्रेम
कुबेरनाथ राय – उत्तराफाल्गुनी के आस-पास
विवेकी राय – उठ जाग मुसाफिर
नामवर सिंह – संस्कृति और सौंदर्य

इकाई - X

आत्मकथा, जीवनी तथा अन्य गद्य विधाएं

रामवृक्ष बेनीपुरी - माटी की मूरतें
महादेवी वर्मा - ठकुरी बाबा
तुलसीराम - मुर्दहिया
शिवरानी देवी - प्रेमचन्द घर में
मन्नू भंडारी - एक कहानी यह भी
विष्णु प्रभाकर - आवारा मसीहा
हरिवंशराय बच्चन – क्या भूलूँ क्या याद करूँ
रमणिका गुप्ता – आपहुदरी
हरिशंकर परसाई - भोलाराम का जीव
कृष्ण चन्दर – जामुन का पेड़
दिनकर - संस्कृति के चार अध्याय
मुक्तिबोध - एक लेखक की डायरी
राहुल सांकृत्यायन - मेरी तिब्बत यात्रा
अज्ञेय - अरे यायावर रहेगा याद

INDEX

UGC NET - HINDI

इकाई-1
हिंदी भाषा और उसका विकास.....1

1. हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि *1*
2. हिन्दी का भौगोलिक विस्तार *3*
3. हिन्दी का भाषिक स्वरूप *7*
4. हिन्दी भाषा प्रयोग के विविध रूप..... *16*
5. देवानागरी लिपि: विशेषताएं और मानकीकरण..... *18*

इकाई-2
हिन्दी साहित्य का इतिहास *21*

1. हिंदी साहित्य इतिहास लेखन: दर्शन, पद्धति परंपरा एवं काल विभाजन..... *21*
2. हिंदी का आदिकाल..... *24*
3. भक्तिकाल..... *40*
4. रीतिकाल एवं उसकी काव्य धाराएं..... *65*
5. आधुनिक काल: काव्य खंड *84*
6. आधुनिक काल: गद्य खंड *127*
7. हिंदी गद्य का विकास..... *129*
8. हिंदी उपन्यास..... *133*
9. हिंदी कहानी *156*
10. हिंदी नाटक *171*
11. हिंदी निबंध..... *191*
12. हिंदी आलोचना..... *207*
13. अन्य गद्य विधाएं *223*
14. प्रवासी साहित्य *234*
15. हिंदी पत्रकारिता *235*
16. विविध..... *239*
17. कथन कारण, गद्यांश..... *250*

इकाई-3
साहित्यशास्त्र (साहित्य विज्ञान *314*

1. भारतीय काव्यशास्त्र *314*
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र *339*

इकाई – 4
वैचारिक पृष्ठभूमि..... *364*

1. वैचारिकों के दर्शन एवं विमर्श, भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन का वैचारिक पृष्ठभूमि एवं फोर्ट विलियम कॉलेज..... *364*

इकाई-5
हिन्दी कविता: पाठ (टेक्स्ट)..... *377*

1. पृथ्वीराज रासो - रेवा तट *377*
2. अमीरखुसरो - खुसरों की पहेलियाँ और मुकरियां..... *377*
3. विद्यापति की पदावली, पद संख्या **1-25**.....**378**
4. कबीर (सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी) पद संख्या - **160 – 209**..... *379*
5. जायसी ग्रंथावली (सं. राम चन्द्र शुक्ल) नागमती वियोग खण्ड..... *380*
6. सूरदास - भ्रमरगीत सार (सं. राम चन्द्र शुक्ल) पद संख्या **21** से **70**..... *383*
7. तुलसीदास - रामचरितमानस, उत्तर काण्ड..... *384*
8. बिहारी सतसई (सं. जगन्नाथ दास रखाकर) दोहा संख्या **1-50**..... *385*
9. घनानन्द कविन (सं. विश्वनाथ मिथ) कवित्त संख्या **1-30**..... *387*

10. अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध प्रियप्रवास 387
11. मैथिलीशरण गुप्त - भारत भारती, साकेत (नवम् मर्ग) 389
12. जयशंकर प्रसाद आंसू, कामायनी (श्रध्दा, लज्जा, इड़ा) 391
13. निराला– जुही की कली, जागी फिर एक बार, सरोजस्मृति, राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता, बांधों न नाव इस ठाँब बंधु। 395
14. सुमित्रानंदन पंत - परिवर्तन, प्रथम रश्मि..... 396
15. महादेवी वर्मा - बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, मै नीर भरी दुख की बदली, फिर विकल है प्राण मेरे, यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र..... 397
16. रामधारी सिंह दिनकर - उर्वशी (तृतीय अंक), रश्मिरथी 398
17. नागार्जुन - कालिदास, बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, खुरदरे पैर, शासन की बंदूक, मनुष्य हूँ..... 402
18. सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय – कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला, हरी घास पर क्षण भर, असाध्यवीणा, कितनी नावों में कितनी बार 402
19. भवानीप्रसाद मिश्र – गीत फरोश, सतपुड़ा के जगल 403
20. मुक्तिबोध – भूल गलती, ब्रह्मराक्षस, अंधेरे में..... 404
21. धूमिल - नक्सलवाड़ी, मोचीराम, अकाल दर्शन, रोटी और संसद..... 406

इकाई-6
हिन्दी उपन्यास: पाठ (टेक्स्ट) 409

1. पं. गौरीदत्त देवरानी जेठानी की कहानी..... 409
2. लाला श्रीनिवास दास - परीक्षा गुरु..... 409
3. प्रेमचन्द – गोदान..... 412
4. अज्ञेय शेखर एक जीवनी (भाग 1) 415
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी - बाणभट्ट की आत्मकथा ...417
6. फणीश्वर नाथ रेणु - मैला आंचल..... 418
7. यशपाल - झूठा सच..... 421
8. अमृत लाल नागर - मानस का हंस..... 423
9. भीष्म साहनी – तमस 425
10. श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी 426
11. कृष्णा सोबती – जिन्दगीनामा..... 428
12. मन्नू भंडारी - आपका बंटी..... 429
13. जगदीश चन्द्र - धरती धन न अपना..... 430

इकाई-7
हिंदी कहानी: पाठ (टेक्स्ट) 432

1. राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला) – चन्द्रदेव से मेरी बातें, दुलाईवाली 432
2. माधवराव सप्रे - एक टोकरी भर मिट्टी 433
3. प्रेमचंद – ईदगाह, दुनिया का अनमोल रतन 433
4. राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह– कानों में कंगना 435
5. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी – उसने कहा था..... 435
6. जयशंकर प्रसाद – आकाशदीप 437
7. जैनेन्द्र – अपना-अपना भाग्य 438
8. फणीश्वरनाथ रेणु - तीसरी कसम, लाल पान की बेगम..... 438
9. अज्ञेय – गैंग्रीन 441
10. शेखर जोशी – कोसी का घटवार 442
11. भीष्म साहनी - अमृतसर आ गया है, चीफ की दावत..... 443
12. हरिशंकर परसाई - इस्पेक्टर मातादीन चांद पर..... 444
13. ज्ञानरंजन – पिता 445

14. कमलेश्वर राजा – निरबंसिया 445
15. निर्मल वर्मा – परिंदे 446

इकाई– 8
हिन्दी नाटक: पाठ (टेक्स्ट) 450

1. भारतेन्दु - अंधेर नगरी, भारत दुर्दशा 450
2. जयशंकर प्रसाद - चन्द्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी 452
3. धर्मवीरभारती - अंधायुग 461
4. लक्ष्मीनारायण लाल - सिंदूर की होली 462
5. मोहन राकेश - आधे-अधूरे, आषाढ़ का एक दिन 463
6. हबीब तनवीर - आगरा बाज़ार 467
7. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - बकरी 468
8. शंकरशेष - एक और द्रोणाचार्य 469
9. उपेन्द्रनाथ अश्क अंजो दीदी 469
10. मन्नू भंडारी – महाभोज..... 470

इकाई- 9
हिंदी निबंध: पाठ (टेक्स्ट) 472

1. भारतेन्दु - दिल्ली दरबार दर्पण, भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है 472
2. प्रताप नारायण मित्र – शिवमूर्ति..... 473
3. बाल कृष्ण भट्ट - शिवशंभु के चिट्ठे..... 474
4. रामचन्द्र शुक्ल - कविता क्या है 475
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी - नाखून क्यों बढ़ते हैं 477
6. विद्यानिवास मिश्र - मेरे राम का मुकुट भीग रहा है 478
7. अध्यापक पूर्ण सिंह - मजदूरी और प्रेम 479
8. कुबेरनाथ राय - उत्तराफाल्गुनी के आस-पास.... 481
9. विवेकी राय - उठ जाग मुसाफिर 482
10. नामवर सिंह - संस्कृति और सौंदर्य..... 482

इकाई- 10
अन्य गद्य विद्याएँ: पाठ (टेक्स्ट) आत्म कथा, जीवनी, संस्मरण इत्यादि 485

1. रामवृक्ष बेनीपुरी - माटी की मूरतें 485
2. तुलसीराम - मुर्दहिया 485
3. शिवरानी देवी- प्रेमचन्द घर में 488
4. मन्नू भंडारी - एक कहानी यह भी 490
5. विष्णु प्रभाकर – आवारा मसीहा 490
6. हरिवंशराय बच्चन - क्या भूलूँ क्या याद करें 494
7. हरिशंकर परसाई - भोलाराम का जीव 496
8. कृष्ण चन्दर – जामुन का पेड़ 497
9. दिनकर – संस्कृति के चार अध्याय 497
10. मुक्तिबोध - एक साहित्यिक की डायरी 499
11. राहुल सांकृत्यायन - मेरी तिब्बत यात्रा 500
12. अज्ञेय – अरे यायावर रहेगा याद 500
13. महादेवी वर्मा – ठकुरी बाबा 501
14. रमणिका गुप्ता – आपहुदरी.....501

यूजीसी नेट हिंदी में पूछे गए प्रश्नों की संख्या - (दिसम्बर 2014 से जनवरी 2026)

इकाई-1		2014	2015		2016	2017		2018		2019		2020	2021	2022	2023		2024	2025		2026
हिंदी भाषा और उसका विकास		दिसम्बर	जून	दिसम्बर	जुलाई	जनवरी	नवंबर	जुलाई	दिसम्बर	जून	दिसम्बर	नवंबर	नवंबर	अक्टूबर	जून	दिसम्बर	अगस्त	जनवरी	जून	जनवरी
1	हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	-	-	-	-	1	1	-	-	-	-	2	2	1	-	1	1	1	-	1
2	हिन्दी का भौगोलिक विस्तार	3	-	1	-	-	-	2	2	2	1	2	-	-	1	1	-	2	-	-
3	हिन्दी का भाषिक स्वरूप	5	2	1	1	-	-	1	-	1	3	3	2	1	6	-	2	6	6	4
4	हिन्दी भाषा प्रयोग के विविध रूप	1	-	-	-	-	-	-	-	2	1	1	1	-	-	1	2	-	-	-
5	देवानागरी लिपि: विशेषताएं और मानकीकरण	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	1

इकाई - 1 हिंदी भाषा और उसका विकास

इकाई 1.1: हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पिछले वर्षों के परीक्षा प्रश्न

1. ईसा की किस शताब्दी में अपभ्रंश का व्यवहार लोकभाषा के अर्थ में होने लगा? [जनवरी 2017]
(1) पहली शताब्दी (2) छठवीं शताब्दी
(3) नवीं शताब्दी (4) ग्यारहवीं शताब्द

2. निम्नलिखित में से किस भाषा का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ? [नवम्बर 2017]
(1) गुजराती (2) पंजाबी
(3) मराठी (4) सिन्धी

3. निम्नलिखित में से कौन-सी भाषा आर्यभाषाओं में शामिल नहीं है? [नवम्बर 2020]
(1) संस्कृत (2) प्राकृत
(3) तुर्की (4) अंग्रेजी

4. निम्नलिखित भाषाओं को उनके विकास क्रम में व्यवस्थित कीजिए [नवम्बर 2020]
A. प्राचीन संस्कृत
B. शौरसेनी
C. लौकिक संस्कृत
D. पश्चिमी हिन्दी
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए
(1) A, C, B, D (2) A, B, C, D
(3) B, C, A, D (4) C, D, A, B

5. निम्नलिखित में से कौन-सी भाषा आर्यभाषाओं में शामिल नहीं है? [नवम्बर 2021]
(1) यूनानी (2) लैटिन
(3) फारसी (4) अरबी

6. कामता प्रसाद गुरु के अनुसार निम्नलिखित का हिन्दी भाषा की उत्पत्ति के अनुसार सही क्रम है। [नवम्बर 2021]
(A) शौरसेनी
(B) नागर अपभ्रंश
(C) पश्चिमी हिन्दी
(D) वर्तमान हिन्दी
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन चुनिए
(1) A, B, C, D (2) B, C, D, A
(3) C, D, A, B (4) D, A, B, C

7. निम्नलिखित में से कौन आर्य भाषाओं में शामिल नहीं है? [अक्टूबर-2022]
(1) संस्कृत (2) अंग्रेजी
(3) अरबी (4) फारसी

8. शौरसेनी अपभ्रंश से निकलने वाली आधुनिक भाषा नहीं है- [दिसम्बर- 2023]
(1) पश्चिमी हिंदी (2) पूर्वी हिंदी
(3) राजस्थानी हिंदी (4) गुजराती

9. पालि के प्रसिद्ध वैयाकरण कच्चायन के अनुसार पालि में कितनी ध्वनियाँ थीं? [अगस्त- 2024]
(1) 40 (2) 41
(3) 42 (4) 43

10. पूर्वी हिन्दी का विकास किस अपभ्रंश से हुआ है? [जनवरी 2025]
(1) शौरसेनी अपभ्रंश (2) अर्ध मागधी अपभ्रंश
(3) महाराष्ट्री अपभ्रंश (4) मागधी अपभ्रंश

11. नीचे दो कथन दिए गए हैं : एक अभिकथन *(A)* के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण *(R)* के रूप में है।
अभिकथन (A): खड़ी बोली या कौरवी का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से हुआ है। लोक साहित्य की दृष्टि से खड़ी बोली बहुत संपन्न है। इसने हिंदी के विविध रूपों को प्रभावित भी किया है।
कारण (R): लोक साहित्य की दृष्टि से खड़ी बोली में पवाड़ा, नाटक, लोककथा लोकगीत आदि पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। इनका काफी अंश प्रकाशित भी हो चुका है। हिंदी, उर्दू, हिन्दुस्तानी तथा दक्खिनी एक सीमा तक खड़ी बोली पर आधारित है।
उपर्युक्त कथन के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए। [जनवरी 2026]
(1) दोनों (A) और (R) सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या है
(2) दोनों (A) और (R) सत्य है लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है
(3) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है
(4) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है

उत्तर

1. उत्तर (4):
व्याख्या ग्यारहवीं शताब्दी से अपभ्रंश भाषा का इस्तेमाल लोकभाषा के तौर पर होने लगा था। अपभ्रंश को अवहट्ट भाषा भी कहा जाता था। अपभ्रंश, भारतीय आर्य भाषाओं के मध्यकाल की आखिरी अवस्था थी। यह प्राकृत और आधुनिक भाषाओं के बीच की कड़ी थी। अपभ्रंश से ही हिन्दी, बंगाली, मराठी, गुजराती जैसी आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का विकास हुआ। अपभ्रंश शब्द का प्राचीनतम प्रमाणिक प्रयोग पतंजलि के महाभारत में मिलता है। दूसरी शताब्दी में भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में अपभ्रंश के लिये भी भ्रष्ट शब्द का प्रयोग किया। शौरसेनी अपभ्रंश से राजस्थानी, पहाड़ी हिन्दी, पश्चिमी हिन्दी जैसी उपभाषाएं विकसित हुईं।

2. उत्तर (1):
व्याख्या शौरसेनी अपभ्रंश से **गुजराती** भाषा का विकास हुआ है। शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई भाषाएँ हैं: गुजराती, पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, पंजाबी। शौरसेनी मध्यकाल में उत्तरी भारत की एक प्रमुख भाषा थी। इसका उपयोग नाटकों में भी होता था, जो इसके साहित्यिक महत्व को दर्शाता है। अशोक के समय के प्राचीन लेखों में विशेष रूप से शौरसेनी का प्रयोग पाया जाता है। मथुरा और उसके आसपास का क्षेत्र शूरसेन कहलाता था, और वहाँ बोली जानेवाली भाषा शौरसेनी कहलाती थी। शौरसेनी अपभ्रंश से कई आधुनिक भाषाएँ विकसित हुईं, जैसे गुजराती, पंजाबी, राजस्थानी, पहाड़ी और पश्चिमी हिंदी, जो आज भी विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाती हैं।

3. उत्तर (3):
व्याख्या संस्कृत और प्राकृत भारतीय आर्यभाषाओं में शामिल हैं, जबकि अंग्रेज़ी, भारोपीय भाषा परिवार की जर्मनिक भाषा शाखा से संबंधित है। इसलिए, **तुर्की भाषा** आर्यभाषाओं में **शामिल नहीं** है। तुर्की भाषा 'तुर्क भाषा परिवार' की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है । संस्कृत प्राचीन भारतीय आर्य भाषा है और वहीं प्राकृत मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा के अंतर्गत आती है।

4. उत्तर (1):
व्याख्या प्राचीन संस्कृत (1500 ई.पू. – 1000 ई.पू.) वैदिक संस्कृत का काल है, जिसमें वेदों की रचना हुई। **लौकिक संस्कृत (1000 ई.पू. – 500 ई.पू.)** इस अवधि में महाकाव्यों और शास्त्रों की रचना हुई, जैसे रामायण और महाभारत। **शौरसेनी (500 ई. – 1000 ई.)** प्राकृत भाषा की एक शाखा थी, जो मध्यकाल में विकसित हुई और अपभ्रंश भाषाओं का आधार बनी। **पश्चिमी हिन्दी (1000 ई. के बाद)** आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में से एक है, जो अपभ्रंश से विकसित हुई और वर्तमान में उत्तर भारत में प्रचलित है। अतः, सही क्रम है: A. प्राचीन संस्कृत, C. लौकिक संस्कृत, B. शौरसेनी, D. पश्चिमी हिन्दी।

5. उत्तर (4):
व्याख्या अरबी भाषा **आर्यभाषाओं में शामिल नहीं** है। आर्यभाषाएँ, जिन्हें भारोपीय भाषा परिवार की भारतीय शाखा भी कहा जाता है, में संस्कृत, हिंदी, बांग्ला, गुजराती, मराठी, पंजाबी, आदि भाषाएँ शामिल हैं। **अरबी भाषा सेमिटिक (सामी) भाषा परिवार की सदस्य है, जो आर्यभाषाओं से भिन्न है।** भारोपीय भाषा परिवार की प्रमुख शाखाएँ जैसे भारतीय-आर्य शाखा (हिंदी, संस्कृत, बंगाली), **ईरानी शाखा (फ़ारसी, कुर्दी)**, जर्मैनिक शाखा (अंग्रेज़ी, जर्मन), रोमान्स शाखा (फ्रेंच, स्पैनिश, इतालवी), और स्लाविक शाखा (रूसी, पोलिश) आज भी सक्रिय रूप से बोली और पढ़ाई जाती हैं।

6. उत्तर (1):
व्याख्या कामता प्रसाद गुरु हिंदी भाषा और साहित्य के एक महान विद्वान, भाषाविद्, और व्याकरणाचार्य थे। उनकी प्रमुख कृति **'हिंदी व्याकरण'** को हिंदी भाषा का पहला व्यवस्थित और वैज्ञानिक व्याकरण माना जाता है। कामता प्रसाद गुरु के अनुसार, हिंदी भाषा की उत्पत्ति का क्रम इस प्रकार है: **शौरसेनी प्राकृत हिंदी भाषा की आदिम अवस्था है।** यह प्राचीन भारतीय भाषाओं में से एक है, जो बाद में अपभ्रंश में विकसित हुई। **शौरसेनी प्राकृत से नागर अपभ्रंश का विकास हुआ,** जो हिंदी भाषा की मध्यकालीन अवस्था मानी जाती है। **नागर अपभ्रंश से पश्चिमी हिंदी का विकास हुआ।** पश्चिमी हिंदी आधुनिक हिंदी का आधार है और इसमें खड़ी बोली, ब्रजभाषा, और अन्य बोलियाँ शामिल हैं। **पश्चिमी हिंदी से आधुनिक खड़ी बोली हिंदी का विकास हुआ,** जो आज की मानक हिंदी है। अतः **विकल्प (1)** सही उत्तर है।

7. उत्तर (3):
व्याख्या अरबी भाषा **आर्यभाषाओं में शामिल नहीं** है। आर्यभाषाएँ, जिन्हें भारोपीय भाषा परिवार की भारतीय शाखा भी कहा जाता है में **संस्कृत,** हिंदी, बांग्ला, गुजराती, मराठी, पंजाबी, आदि भाषाएँ शामिल हैं। **अरबी भाषा सेमिटिक (सामी) भाषा परिवार की सदस्य है, जो आर्यभाषाओं से भिन्न है।** भारोपीय भाषा परिवार की प्रमुख शाखाएँ जैसे भारतीय-आर्य शाखा (हिंदी, संस्कृत, बंगाली), **ईरानी शाखा (फ़ारसी, कुर्दी)**, जर्मैनिक शाखा (**अंग्रेज़ी**, जर्मन), रोमान्स शाखा (फ्रेंच, स्पैनिश, इतालवी), और स्लाविक शाखा (रूसी, पोलिश) आज भी सक्रिय रूप से बोली और पढ़ाई जाती हैं।

8. उत्तर (2):
व्याख्या शौरसेनी अपभ्रंश प्राचीन भारत में शूरसेन प्रदेश (वर्तमान ब्रज क्षेत्र) की प्रमुख भाषा थी। यह मध्यकाल में उत्तरी भारत की एक महत्वपूर्ण प्राकृत भाषा थी, जिसका प्रयोग संस्कृत नाटकों में भी होता था। **शौरसेनी से ही पश्चिमी हिंदी, राजस्थानी, और गुजराती** जैसी भाषाओं का विकास हुआ है। **पूर्वी हिंदी** का विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है, जिसमें अवधी, बघेली, और छत्तीसगढ़ी जैसी बोलियाँ शामिल हैं। **अत: शौरसेनी अपभ्रंश से निकलने वाली आधुनिक भाषा** में **पूर्वी हिंदी** नहीं है।

9. उत्तर (2):
व्याख्या पालि के प्रसिद्ध वैयाकरण कच्चायन के अनुसार, पालि भाषा में कुल 41 ध्वनियाँ थीं, जिनमें 8 स्वर और 33 व्यंजन शामिल हैं। पालि, भारत की प्राचीन भाषाओं में से एक है। यह भाषा भगवान बुद्ध के समय में बोली जाती थी। पालि भाषा को बौद्ध त्रिपिटक की भाषा के नाम से भी जाना जाता है। यह भाषा ब्राह्मी लिपि में लिखी जाती थी। **कच्चायन**, पालि भाषा के पहले वैयाकरण लिखने वाले आचार्य थे। उन्होंने कच्चान व्याकरण लिखा था। यह पालि भाषा का सबसे पुराना व्याकरण है। इसमें कुल 675 सूत्र हैं। कच्चान व्याकरण की रचना में संस्कृत का तंत्र व्याकरण और अष्टाध्यायी का अनुसरण किया गया है। इस व्याकरण पर कई टीकाएं लिखी गई हैं।

10. उत्तर (2):
व्याख्या पूर्वी हिंदी का विकास **अर्धमागधी अपभ्रंश** से हुआ है। पूर्वी हिंदी के अंतर्गत प्रमुख बोलियाँ जैसे अवधी, बघेली, और छत्तीसगढ़ी आती हैं। अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित होने के कारण, इन बोलियों में अर्धमागधी के भाषिक लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। **शौरसेनी अपभ्रंश:** शौरसेनी

अपभ्रंश से पश्चिमी हिंदी की बोलियाँ विकसित हुई हैं। **प्रमुख बोलियाँ:** खड़ी बोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, हरियाणवी। **भौगोलिक क्षेत्र:** मुख्यतः उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, और राजस्थान के कुछ हिस्सों में प्रचलित। **महाराष्ट्री अपभ्रंश:** महाराष्ट्री अपभ्रंश से मराठी भाषा का विकास हुआ है। **प्रमुख भाषा:** मराठी। **भौगोलिक क्षेत्र:** मुख्यतः महाराष्ट्र राज्य में प्रचलित। **मागधी अपभ्रंश:** मागधी अपभ्रंश से बिहारी समूह की भाषाएँ विकसित हुई हैं। **प्रमुख बोलियाँ:** भोजपुरी, मैथिली, मगही। **भौगोलिक क्षेत्र:** बिहार, झारखंड, और उत्तर प्रदेश के पूर्वी हिस्सों में प्रचलित। **सही उत्तर:** (2) अर्धमागधी अपभ्रंश।

11. उत्तर (1):

व्याख्या सही विकल्प **(1) दोनों (A) और (R) सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या है**। **विश्लेषण: अभिकथन (A) की सत्यता:** भाषा विज्ञान के अनुसार, **खड़ी बोली (कौरवी)** का विकास निश्चित रूप से **शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप** से हुआ है।

- यह कहना भी पूर्णतः सत्य है कि खड़ी बोली लोक साहित्य की दृष्टि से बहुत संपन्न है (विशेषकर मेरठ, बिजनौर और सहारनपुर के क्षेत्रों में)।
- इसने हिंदी के अन्य रूपों (जैसे मानक हिंदी, उर्दू आदि) को आधार प्रदान कर प्रभावित किया है।

- **कारण (R) की सत्यता:** * खड़ी बोली के लोक साहित्य में **पवाड़ा (वीरगाथात्मक गीत), लोक कथाएँ, लोकगीत (जैसे मल्हार, रागिनी) और स्वांग/नाटक** प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।
- राहुल सांकृत्यायन जैसे विद्वानों ने इसके काफी अंश को प्रकाशित भी करवाया है।
- **हिंदी, उर्दू, हिन्दुस्तानी और दक्खिनी**—ये चारों शैलियाँ अपनी व्याकरणिक संरचना के लिए मुख्य रूप से खड़ी बोली पर ही आधारित हैं।

व्याख्या का संबंध:

- चूंकि कारण (R) उन विशिष्ट विधाओं (पवाड़ा, लोकगीत आदि) और प्रभाव क्षेत्रों (उर्दू, दक्खिनी आदि) का विवरण दे रहा है जिनकी चर्चा अभिकथन (A) में सामान्य रूप से की गई है, इसलिए **(R), (A) की सही व्याख्या करता है।**

खड़ी बोली से जुड़े कुछ अतिरिक्त महत्वपूर्ण तथ्य:

- **नामकरण:** इसे 'कौरवी' नाम **राहुल सांकृत्यायन** ने दिया था।
- **क्षेत्र:** मेरठ, बिजनौर, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून का मैदानी भाग और दिल्ली के आसपास का क्षेत्र।
- **प्रकृति:** यह 'आकार बहुला' बोली है (जैसे- घोड़ा, काला, आया)।

इकाई 1.2: हिन्दी का भौगोलिक विस्तार

पिछले वर्षों के परीक्षा प्रश्न

1. पश्चिमी हिन्दी की दो बोलियों का सही युग्म है **[दिसम्बर-2014]**

(1) कन्नौजी अवधी (2) ब्रज-बघेली
(3) छत्तीसगढ़ी –बाँगरू (4) खड़ीबोली- बुन्देली

2. अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित बोली है **[दिसम्बर-2014]**

(1) बाँगरू (2) बघेली
(3) ब्रजभाषा (4) भोजपुरी

3. इनमें से कौन-सी बोली ओकार बहुला नहीं है? **[दिसम्बर-2014]**

(1) खड़ी बोली (2) ब्रज
(3) बुन्देली (4) कन्नौजी

4. इनमें से किस बोली का बिहारी हिन्दी से सम्बन्ध नहीं है? **[दिसम्बर 2015]**

(1) अवधी (2) मगही
(3) भोजपुरी (4) मैथिली

5. निम्नलिखित में से पश्चिमी हिन्दी की बोली नहीं है। **[जुलाई-2018]**

(1) ब्रजभाषा (2) कन्नौजी
(3) बुन्देली (4) मगही

6. निम्नलिखित बोलियों को उनके क्षेत्र के साथ सुमेलित कीजिए **[जुलाई-2018]**

सूची I		सूची II	
(A)	खड़ी बोली	I	बिलासपुर
(B)	ब्रजभाषा	II	सुल्तानपुर
(C)	बांगरू	III	आगरा
(D)	अवधी	IV	बिजनौर
		V	करनाल

कूट

	A	B	C	D
(1)	III	IV	V	I
(2)	IV	III	V	II
(3)	IV	II	III	V
(4)	II	III	IV	V

7. इनमें से कौन-सी बोली 'बिहारी हिन्दी' वर्ग में नहीं आती है? **[दिसम्बर 2018]**

(1) भोजपुरी (2) मैथिली
(3) छत्तीसगढ़ी (4) मगही

8. निम्नलिखित बोलियों को उनके क्षेत्र के साथ सुमेलित कीजिए। नीचे दिए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर को चुनिए **[दिसम्बर 2018]**

सूची I	सूची II
A. पश्चिमी पहाड़ी	I. गढ़वाल
B. मध्यवर्ती पहाड़ी	II. पटना
C. भोजपुरी	III. शिमला
D. मगही	IV. गाजीपुर
	V. बिलासपुर

कूट

	A	B	C	D
(1)	III	IV	V	I
(2)	I	III	I	IV
(3)	III	I	IV	II
(4)	IV	III	II	V

9. निम्नलिखित में से कौन-सी बोली राजस्थान की नहीं है? [जून 2019]

(1) मेवाती (2) मण्डियाली
(3) मारवाड़ी (4) मेवाड़ी

10. हिन्दी के निम्नलिखित लोकमंचीय रूपों को प्रचलन की प्रमुखता के आधार पर प्रान्तों से सुमेलित कीजिए [जून 2019]

सूची I (लोकमंचीय रूप)	सूची II (प्रान्त)
A. सांग	I. मध्य प्रदेश
B. विदेसिया	II. राजस्थान
C. माच	III. हरियाणा
D. ख्याल	IV. बिहार
	V. गुजरात

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए

	A	B	C	D
(1)	II	IV	III	V
(2)	III	IV	I	II
(3)	I	II	III	IV
(4)	IV	III	V	I

11. निम्नलिखित में से कौन-सी बोली पश्चिमी हिन्दी की नहीं है? [दिसम्बर 2019]

(1) कन्नौजी (2) बुन्देली
(3) ब्रजभाषा (4) मगही

12. निम्नलिखित बोली वर्गों को उनके सम्बद्ध बोलियों के साथ सुमेलित कीजिए [नवम्बर 2020]

सूची I (वर्ग)	सूची II (बोली)
A. पश्चिमी हिन्दी	I मेवाती
B. पूर्वी हिन्दी	II बुन्देली
C. बिहारी हिन्दी	III. बघेली
D राजस्थानी.	IV. मगही

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए

	A	B	C	D
(1)	I	II	III	IV
(2)	II	III	IV	I
(3)	III	IV	II	I
(4)	IV	I	II	III

13. हिन्दी की लोकनाट्य शैलियों को प्रदेशों के साथ सुमेलित कीजिए [नवम्बर 2020]

सूची I	सूची II
A. सांग	I. उत्तर प्रदेश
B. नौटंकी	II. मालवा (मध्य प्रदेश)
C. माच	III. छत्तीसगढ़
D. नाचा	IV. हरियाणा

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए

	A	B	C	D
(1)	IV	I	II	III
(2)	II	I	III	IV
(3)	IV	III	II	I
(4)	III	I	IV	II

14. 'मालवी' का केंद्र है? [जून 2023]

(1) जयपुर (2) इंदोर
(3) जोधपुर (4) जबलपुर

15. सूची-I से सूची -II का मिलान कीजिए: [दिसम्बर 2023]

सूची-I बोली	सूची –II क्षेत्र
(A) मारवाड़ी	(I) कोटा
(B) हाड़ौती	(II) अजमेर
(C) ढूंढाणी	(III) अलवर
(D) मेवाती	(IV) जयपुर

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)
(2) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(III)
(3) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)
(4) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(IV)

16. "उत्तर अपभ्रंश ही पुरानी हिन्दी है", यह कथन किस विद्वान का है? [जनवरी 2025]

(1) रामचन्द्र शुक्ल
(2) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(3) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(4) महावीर प्रसाद द्विवेदी

17. सूची-I से सूची -II का मिलान कीजिए: [जनवरी 2025]

सूची-I (उपभाषाएँ)	सूची-II (बोलियाँ)
(A) पश्चिमी हिन्दी	(I) अवधी
(B) पूर्वी हिन्दी	(II) गढ़वाली
(C) बिहारी	(III) ब्रजभाषा
(D) पहाड़ी	(IV) भोजपुरी

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(III)
(2) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)
(3) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)
(4) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(II)

उत्तर

1. उत्तर (4):

व्याख्या पश्चिमी हिन्दी की दो बोलियों का सही युग्म **खड़ीबोली- बुन्देली** है। **खड़ी बोली**: यह पश्चिमी हिंदी की एक प्रमुख बोली है, जिसका क्षेत्र उत्तर प्रदेश के मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, बिजनौर, रामपुर, मुरादाबाद जिलों तथा उत्तराखंड के देहरादून आदि तक फैला हुआ है। **बुंदेली**: यह बुंदेलखंड की उपभाषा है, जो उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है।

2. उत्तर (2):

व्याख्या अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित बोली '**बघेली**' है।

अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित भाषाओं में प्रमुखतः पूर्वी हिंदी की बोलियाँ शामिल हैं, जैसे अवधी, बघेली, और छत्तीसगढ़ी। **बाँगरू**: यह हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बोली जाने वाली एक बोली है, जो शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है। **बघेली**: यह मध्य प्रदेश के बघेलखंड क्षेत्र में बोली जाती है और अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई है। **ब्रजभाषा**: यह उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र में बोली जाती है और शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है। **भोजपुरी**: यह बिहार, उत्तर प्रदेश और झारखंड के कुछ हिस्सों में बोली जाती है और मागधी अपभ्रंश से विकसित हुई है।

3. उत्तर (1):

व्याख्या खड़ी बोली ओकार बहुला नहीं है। बोली में "ओकार बहुलता" का मतलब होता है, उस बोली में "ओ" ध्वनि का प्रचलन या अधिक उपयोग होना। **खड़ी बोली** यह हिंदी का एक प्रमुख रूप है, जिसे वर्तमान में मानक हिंदी के रूप में अपनाया गया है। खड़ी बोली में ओकार बहुलता नहीं है। इसमें "ए" और "इ" ध्वनियों का प्रचलन अधिक होता है, और "ओ" का प्रयोग अपेक्षाकृत कम होता है। इसलिए खड़ी बोली **ओकार बहुला नहीं है**। **ब्रज** ब्रज बोली में ओकार बहुलता होती है। **बुन्देली** बुंदेली में भी ओकार का प्रचलन है। **कन्नौजी** कन्नौजी बोली में भी ओकार का उपयोग अधिक होता है।

4. उत्तर (1):

व्याख्या बिहारी हिंदी से संबंधित बोलियों में मुख्यतः ये शामिल हैं: भोजपुरी, मगही, और मैथिली। इनका उपयोग बिहार और आसपास के क्षेत्रों में होता है। **अवधी का संबंध बिहारी हिंदी से नहीं है**। **अवधी** एक प्रमुख बोली है, जो मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र (जिसमें लखनऊ, रायबरेली, बाराबंकी, और इलाहाबाद जैसे क्षेत्र शामिल हैं) में बोली जाती है।

5. उत्तर (4):

व्याख्या मगही, पश्चिमी हिन्दी की बोली नहीं है. मगही, बिहारी हिन्दी की उपभाषा है। यह बिहार के पटना, गया, मुंगेर, जहानाबाद, नालंदा और झारखंड के पलामू, हजारीबाग के क्षेत्र में बोली जाती है पश्चिमी हिन्दी की बोलियां ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुन्देली, खड़ी बोली, हरियाणवी, दक्खिनी पश्चिमी हिन्दी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। खड़ी बोली अपने मूल रूप में मेरठ, रामपुर, मुरादाबाद, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, बागपत के आस-पास बोली जाती है।

6. उत्तर (2):

व्याख्या सूचियों का मिलान**: खड़ी बोली** - **बिजनौर** खड़ी बोली का मुख्य क्षेत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश है, और बिजनौर इसका महत्वपूर्ण केंद्र है। **ब्रजभाषा** - **आगरा** ब्रजभाषा का प्रमुख क्षेत्र ब्रज मंडल है, जिसमें आगरा, मथुरा, और वृंदावन आते हैं। **बांगरू** - **करनाल** बांगरू बोली हरियाणा और उसके आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है, जिसमें करनाल प्रमुख क्षेत्र है। **अवधी** - **सुल्तानपुर** अवधी बोली का मुख्य क्षेत्र उत्तर प्रदेश का पूर्वी भाग है, इसमें सुल्तानपुर, फैजाबाद (अयोध्या), प्रतापगढ़, गोंडा, बहराइच, रायबरेली, और बाराबंकी जैसे जिले आते हैं। सुल्तानपुर इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जहाँ अवधी भाषा के शुद्ध रूप का प्रभाव देखा जा सकता है।

7. उत्तर (3):

→ **व्याख्या:** बिहारी हिंदी की प्रमुख बोलियाँ हैं: भोजपुरी, मगही, मैथिली। **छत्तीसगढ़ी, पूर्वी हिंदी की एक बोली है**, जो मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ राज्य में बोली जाती है। इस प्रकार, छत्तीसगढ़ी 'बिहारी हिंदी' वर्ग में सम्मिलित नहीं होती। छत्तीसगढ़ी भाषा का विकास अर्धमागधी प्राकृत से हुआ है, जो अवधी की सहोदरा मानी जाती है। छत्तीसगढ़ी भाषा, मराठी और उड़िया भाषाओं से प्रभावित हुई है।

8. उत्तर (3):

→ **व्याख्या:** बोलियों को उनके क्षेत्रों के साथ सही सुमेलन इस प्रकार है **पश्चिमी पहाड़ी – शिमला**, पश्चिमी पहाड़ी बोलियाँ हिमाचल प्रदेश के शिमला, कुल्लू, मंडी, चंबा और लाहुल-स्पीति क्षेत्रों में बोली जाती हैं। **मध्यवर्ती पहाड़ी – गढ़वाल**, मध्यवर्ती पहाड़ी के अंतर्गत गढ़वाली और कुमाऊँनी बोलियाँ आती हैं, जो उत्तराखंड के गढ़वाल और कुमाऊँ क्षेत्रों में प्रचलित हैं। **भोजपुरी – गाजीपुर**, भोजपुरी पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर, बनारस, जौनपुर, मिर्जापुर, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, बस्ती, बलिया, और बिहार के शाहाबाद, चंपारण, सारण जिलों में बोली जाती है। **मगही – पटना**, मगही मुख्य रूप से बिहार के पटना, गया, पलामू, हजारीबाग, मुंगेर, भागलपुर जिलों में बोली जाती है।

9. उत्तर (2):

→ **व्याख्या:** मण्डियाली भाषा हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले और मंडी घाटी में बोली जाती है। यह राजस्थान की भाषा नहीं है। **अन्य विकल्पों की व्याख्या: मेवाती**: यह बोली राजस्थान के अलवर और भरतपुर जिलों में प्रचलित है। **मारवाड़ी**: यह राजस्थान के जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर क्षेत्रों में बोली जाती है। **मेवाड़ी**: यह बोली राजस्थान के उदयपुर और आसपास के क्षेत्रों में प्रचलित है। इस प्रकार, **मण्डियाली को छोड़कर अन्य सभी बोलियाँ राजस्थान की हैं**।

10. उत्तर (2):

→ **व्याख्या:** लोकमंचीय रूपों को उनके प्रचलन की प्रमुखता के आधार पर संबंधित प्रांतों से सुमेलित किया गया है **सांग**: यह **हरियाणा** क्षेत्र में प्रचलित एक लोकनाट्य शैली है। इसमें 20-30 कलाकार शामिल होते हैं, जो गीत, संवाद, भाव, और वार्तालाप के माध्यम से प्रदर्शन करते हैं। **विदेसिया**: यह **बिहार** और उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में, विशेषकर बलिया, देवरिया, आरा, और छपरा में प्रचलित अत्यंत लोकप्रिय गीत और नाट्य शैली है। इसके रचयिता भिखारी ठाकुर थे, जो बिहार के छपरा जिले के निवासी थे। **माच**: यह **मध्य प्रदेश** के मालवा क्षेत्र का प्रमुख लोकनाट्य है, जिसकी उत्सभूमि शिप्रा तट स्थित पुरातन नगरी उज्जैन मानी जाती है। लगभग दो सौ से अधिक वर्षों से माच मालवा का प्रमुख लोकनाट्य बना हुआ है। **ख्याल**: यह **राजस्थान** की एक पारंपरिक लोकनाट्य शैली है, जिसमें संगीत, नृत्य, और नाटक का समावेश होता है। ख्याल में पौराणिक, ऐतिहासिक, और

सामाजिक विषयों पर आधारित कथाओं का मंचन किया जाता है।

11. उत्तर (4):

→ **व्याख्या: पश्चिमी हिंदी** की प्रमुख बोलियाँ हैं: खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रजभाषा, कन्नौजी, और बुंदेली। पश्चिमी हिन्दी का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ। **मगही** भाषा बिहारी हिन्दी के अंतर्गत आती है और इसका विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है। अन्य बिहारी हिन्दी की बोलियाँ- मैथिली, भोजपुरी। इस प्रकार, **मगही** पश्चिमी हिंदी की बोली नहीं है।

12. उत्तर (2):

व्याख्या पश्चिमी हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ हैं- खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रजभाषा, कन्नौजी, **बुंदेली**। इन बोलियों का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। **पूर्वी हिन्दी** की प्रमुख बोलियाँ हैं- अवधी, **बघेली**, छत्तीसगढ़ी। इन बोलियों का विकास अर्धमागधी प्राकृत से हुआ है और ये पूर्वी हिन्दी के अंतर्गत आती हैं। बिहारी हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ हैं- भोजपुरी, **मगही**, मैथिली। इन बोलियों का विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है। राजस्थानी भाषा की प्रमुख बोलियाँ हैं- मारवाड़ी, ढूंढाड़ी (जयपुरी), मालवी, शेखावाटी, बागड़ी, **मेवाती।** इन बोलियों का विस्तार राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में है, और प्रत्येक बोली की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक और भाषाई पहचान है। अतः सही उत्तर विकल्प (2) है: A - II, B - III, C -IV, D - I, I

13. उत्तर (1):

व्याख्या '**सांग**' **हरियाणा** की एक प्रसिद्ध लोकनाट्य शैली है, जिसमें संगीत, नृत्य और नाटक का समावेश होता है। इसमें पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक कथाओं का मंचन किया जाता है। सांग में संवाद, गायन और अभिनय के माध्यम से कथाओं को प्रस्तुत किया जाता है। '**नौटंकी**' **उत्तर प्रदेश** की एक लोकप्रिय लोकनाट्य शैली है, जो विशेषकर ब्रज और अवध क्षेत्रों में प्रचलित है। इसमें संगीत, नृत्य और नाटक का संयोजन होता है, और कथाएँ प्रायः प्रेम, वीरता या सामाजिक मुद्दों पर आधारित होती हैं। नौटंकी में संवाद और गीत तुकबंदी में होते हैं। '**माच**' **मध्य प्रदेश** के मालवा क्षेत्र की प्रमुख लोकनाट्य शैली है। 'माच' शब्द 'मंच' का अपभ्रंश है, जो इस नाट्य शैली के मंचन को दर्शाता है। माच में धार्मिक, पौराणिक और सामाजिक विषयों पर आधारित कथाओं का प्रदर्शन होता है, जिसमें संगीत और नृत्य का महत्वपूर्ण स्थान है। '**नाचा**' **छत्तीसगढ़** की एक प्रसिद्ध लोकनाट्य शैली है, जिसमें नृत्य, संगीत और नाटक का मिश्रण होता है। यह शैली विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित है और इसमें सामाजिक, पौराणिक और समसामयिक विषयों पर आधारित प्रस्तुतियाँ होती हैं। नाचा में हास्य और व्यंग्य का भी समावेश होता है। अतः विकल्प (1) सही उत्तर है।

14. उत्तर (1):

व्याख्या मालवी भाषा का प्रमुख केंद्र इंदौर है। मालवी, जो राजस्थानी की उपबोली है, मुख्यतः मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में बोली जाती है। इस क्षेत्र में इंदौर, उज्जैन, देवास, शाजापुर, और सीहोर जिले शामिल हैं। इंदौर, मालवा क्षेत्र का एक प्रमुख शहर होने के नाते, मालवी भाषा और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। राजस्थानी उपभाषा की बोलियां मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मालवी है। पश्चिमी हिंदी उपभाषा की प्रमुख बोलियां खड़ी बोली (कोरवी), ब्रजभाषा, बुंदेली, हरियाणवी (बंगारू), कन्नौजी। पूर्वी हिंदी उपभाषा की प्रमुख बोलियां अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी। पहाड़ी उपभाषा की प्रमुख बोलियां - गढ़वाली, कुमाऊनी, नेपाली। बिहारी उपभाषा की प्रमुख बोलियां मैथिली, मगही, भोजपुरी।

15. उत्तर (1):

व्याख्या हिन्दी भाषा शौरसेनी प्राकृत से विकसित हुई है। शौरसेनी प्राकृत से निकलने वाली अन्य भाषाओं में पंजाबी, गुजराती, **राजस्थानी**, लहंडा, सिंधी, और पश्चिमी हिन्दी जैसी भाषाएं शामिल हैं। राजस्थानी भाषा की भी उत्पत्ति शौरसेनी प्राकृत से मानते हैं। **राजस्थान की विभिन्न बोलियाँ उनके विशिष्ट क्षेत्रों में बोली जाती हैं। (A) मारवाड़ी:** यह बोली राजस्थान के जोधपुर,**अजमेर**, पाली, बीकानेर, नागौर, सिरोही, जैसलमेर आदि जिलों में बोली जाती है। **(B) हाड़ौती:** हाड़ौती बोली **कोटा,** बूंदी, बारां और झालावाड़ क्षेत्रों में प्रचलित है। **(C) ढूंढाणी:** यह बोली **जयपुर,** दौसा, बगरू, दूदू तक के क्षेत्र में बोली जाती है, जो प्राचीन ढूंढाड़ प्रदेश का हिस्सा है। **(D) मेवाती: अलवर** और भरतपुर जिलों में मेवाती बोली जाती है, जिसे मेवात क्षेत्र कहा जाता है। अत: सही विकल्प **(1) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)।**

16. उत्तर (2):

व्याख्या प्रस्तुत प्रश्न के अनुसार, "उत्तर अपभ्रंश ही पुरानी हिन्दी है" यह कथन चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' का है। उन्होंने अपभ्रंश को पुरानी हिंदी के रूप में व्याख्यायित किया है। चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (1883-1922) एक प्रख्यात हिंदी साहित्यकार, भाषाविद्, और निबंधकार थे। उन्होंने अपभ्रंश भाषा के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया और इसे 'पुरानी हिंदी' के रूप में व्याख्यायित किया। उनकी इस अवधारणा का विस्तार उनके निबंध 'पुरानी हिंदी' में मिलता है, जिसमें उन्होंने अपभ्रंश और हिंदी के विकास पर विचार प्रस्तुत किए हैं। गुलेरी जी बहुभाषाविद् थे, उन्हें संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, अंग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन, मराठी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी, राजस्थानी आदि भाषाओं का ज्ञान था। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'उसने कहा था', 'बुद्धू का काँटा', और 'सुखमय जीवन' जैसी कहानियाँ शामिल हैं।

17. उत्तर (2):

व्याख्या सूची-I (उपभाषाएँ) और सूची-II (बोलियाँ) के मिलान के लिए सही उत्तर विकल्प (2) चुना है, जो निम्नलिखित है: **पश्चिमी हिन्दी**: खड़ी बोली, हरियाणवी, **ब्रजभाषा**, कन्नौजी, बुंदेली। **पूर्वी हिन्दी**: **अवधी**, बघेली, छत्तीसगढ़ी। **बिहारी**: **भोजपुरी**, मगही, मैथिली। **पहाड़ी**: **गढ़वाली**, कुमाऊँनी, नेपाली।

इकाई 1.3: हिन्दी का भाषिक स्वरूप

पिछले वर्षों के परीक्षा प्रश्न

1. कण्ठ्योष्ठ्य ध्वनि का उदाहरण है। [दिसम्बर-2014]
(1) औ (2) ए
(3) क (4) त

2. शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होने की योग्यता प्राप्त करता है, तो उसे कहा जाता है [दिसम्बर-2014]
(1) वाक्य (2) ध्वनि
(3) पद (4) समास

3. इनमें से कौन-सी ध्वनि संयुक्त व्यंजन है? [दिसम्बर-2014]
(1) क्य (2) च्च
(3) ट (4) औ

4. भाषा निर्माण की इकाइयों का सही अनुक्रम है। [दिसम्बर-2014]
(1) शब्द, ध्वनि, वाक्य, पद (2) शब्द, वाक्य, ध्वनि, पद
(3) पद, वाक्य, ध्वनि, शब्द (4) ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य

5. निम्नांकित में से उच्चारण स्थान के आधार पर कण्ठ से लेकर मुख विवर में उच्चरित व्यंजन ध्वनियों का सही अनुक्रम है [दिसम्बर-2014]
(1) कंठ्य, तालव्य, वर्त्स्य, दंत्य, ओष्ठ्य
(2) तालव्य, कंठ्य, ओष्ठ्य, दंत्य, वर्त्स्य
(3) दंत्य, ओष्ठ्य, कंठ्य वर्त्स्य, तालव्य
(4) ओष्ठ्य, वर्त्स्य, तालव्य, कंठ्य, दंत्य

6. इनमें से कौन-सा विराम चिह्न ऐसा है, जो हिन्दी में अंग्रेजी भाषा से नहीं लिया गया है? [जून 2015]
(1) , (2) ;
(3) ? (4) |

7. प्रयत्न के आधार पर 'ल' किस प्रकार की ध्वनि है? [जून 2015]
(1) पाश्विक (2) उत्क्षिप्त
(3) प्रकम्पित में (4) संघर्षहीन

8. इनमें से कौन सा युग्म अघोष ध्वनि है? [दिसम्बर 2015]
(1) ग, घ (2) ड, ढ
(3) प, फ (4) द, ध

9. 'ण' वर्ण का उच्चारण स्थान है [जुलाई 2016]
(1) तालु (2) मूर्धा
(3) वत्स्य (4) कण्ठ

10. आभ्यन्तर प्रयत्न के अनुसार वर्णों के भेद हैं। [जुलाई-2018]
(1) तीन (2) चार
(3) दो (4) पाँच

11. 'तौलिया' मूलतः किस भाषा का शब्द है? [जून 2019]
(1) उर्दू (2) हिन्दी
(4) पुर्तगाली (3) तुर्की

12. संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ प्रकाशित होता है, उसे क्या कहते हैं? [दिसम्बर 2019]
(1) विकृत अव्यय (2) कारक
(3) सम्बन्धसूचक (4) क्रियाविशेषण

13. हिन्दी में प्रचलित 'सिफारिश' किस भाषा का शब्द है? [दिसम्बर 2019]
(1) हिन्दी (2) फारसी
(3) अरबी (4) तुर्की

14. 'इस मेले का मुख्य उद्देश्य है कि व्यापार की वृद्धि हो । ' – यह किस प्रकार का वाक्य है? [दिसम्बर 2019]
(1) संयुक्त वाक्य (2) मिश्र वाक्य
(3) साधारण वाक्य (4) उद्देश्यवर्द्धक वाक्य

15. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द रूढ़ है, यौगिक नहीं? [नवम्बर 2020]
(1) पीला (2) झटपट
(3) घुड़साल (4) पंकज

16. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द फारसी का है? [नवम्बर 2020]
(1) दाग (2) औरत
(3) नीलम (4) फीस

17. निम्नलिखित में दन्त्य वर्ण हैं [नवम्बर 2020]
A. 'ड' **B.** 'ढ'
C. 'द' **D.** 'ध'
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए
(1) A, B और C (2) B, C और D
(3) A, B और D (4) C और D

18. निम्नलिखित में से कौन-सा तद्भव शब्द नहीं है? [नवम्बर 2021]
(1) राय (2) खेत
(3) दाहिना (4) कवि

19. निम्नलिखित में से कौन-सा तद्भव शब्द नहीं है? [नवम्बर 2021]
(1) राय (2) खेत
(3) दाहिना (4) कवि

20. निम्नलिखित में तत्सम शब्द है [अक्टूबर-2022]
(1) आग (2) बयार
(3) पंख (4) अक्षर

21. सूची I का सूची II से मिलान कीजिए [जून 2023]

सूची I नामकरण	सूची II वर्ण
A. महाप्राण ध्वनि	I. ज
B. घोष ध्वनि	II ल
C. पार्श्विक व्यंजन	III. र
D. लोड़ित व्यंजन	IV. ख

निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) A-IV, B-III, C-II, D-I (2) A-I, B-IV, C-II, D-III
(3) A-IV, B-I, C-II, D-III (4) A-IV, B-II, C-I, D-III

22. नीचे दो कथन दिए गए हैं [जून 2023]
कथन-I: 'गिरिधर' बहुब्रीही समास का उदाहरण है।
कथन-II: 'रामकृष्ण' तत्पुरुष समास का उदाहरण है।
उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

(1) कथन I और II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन 1 असत्य है, लेकिन कथन 11 सत्य है

23. निम्नलिखित में से अविकारी शब्द हैं। [जून 2023]
(1) संज्ञा (2) विशेषण
(3) क्रिया (4) क्रिया विशेषण

24. निम्नलिखित में से अर्ध संवृत स्वर है। [जून 2023]
(1) आ (2) ऐ. ओ
(3) ए. ओ (4) उ. ऊ

25. निम के संबंध में उपयुक्त कथन हैं। [जून 2023]
A. वाक्य में शब्दों के संबंध निर्धारित करते हैं।
B. इसका संबंध मौखिक भाषा से है।
C. सार्थकता की दृष्टि से शब्द लघुतम इकाई है।
D. यह उच्चरित भाषा की लघुतम इकाई है।
E. इसका ज्ञान भाषा के शुद्ध उच्चारण को जानने में सहायक है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) केवल A, B और C (2) केवल B, C और D
(3) केवल B, D और E (4) केवल A D और E

26. आकारांत एकवचन पुल्लिंग संज्ञाओं के विकृत रूप का प्रत्यय क्या है? [जून 2023]
(1) आ (2) ए
(3) शून्य प्रत्यय (4) इ

27. सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए [अगस्त - 2024]

सूची I (हिंदी व्यंजन)	सूची II (उच्चारण स्थान)
A. प. फ. ब. भ्	I. वर्त्स्य
B. न्. न्ह. ल्, ल्ह	II. कोमलतालव्य
C. क्. ख् ग् घ्	III. द्वयोष्ठ्य
D. च् छ् ज् झ्	IV. तालव्य

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) A-III, B-I, C-II, D- IV (2) A-III, B-I, C-IV, D-II
(3) A-III, B-IV, C-II, D-I (4) A-III, B-II, C-I, DIV

28. किशोरीदास वाजपेयी की पुस्तक हिन्दी की वर्तनी तथा शब्द- विश्लेषण के अध्यायों का सही अनुक्रम है: [अगस्त - 2024]
A. समास में वर्तनी की स्थिति
B. वाक्य विन्यास में वर्तनी का विवेचन
C. हिंदी की कुछ क्रियाएँ
D. नाम, यानी संज्ञाएँ
E. हिंदी में अनुनासिक वर्ण और अनुस्वार
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) C, D, A, B, E (2) C, D, E, A, B
(3) D, E, C, A, B (4) D. A, B, C, E

29. कामता प्रसाद गुरु ने व्युत्पत्ति के अनुसार सार्वनामिक विशेषण के कितने भेद माने हैं? [जनवरी 2025]
(1) दो (2) तीन
(3) चार (4) पाँच

30. अर्ध संवृत स्वर निम्न में कौन सा है? [जनवरी 2025]
(1) आ (2) ओ
(3) ऊ (4) इ

31. कारक का सही अनुक्रम है: [जनवरी 2025]
(A) संप्रदान कारक (B) करण कारक
(C) अधिकरण कारक (D) अपादान कारक
(E) संबंध कारक
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) (B), (D), (A), (E), (C) (2) (B), (D), (E), (A), (C)
(3) (B), (A), (D), (E), (C) (4) (B), (A), (C), (E), (D)

32. निम्नलिखित में से कौन से युग्म सही हैं? [जनवरी 2025]
(A) संवृत्त स्वर – उ
(B) स्पर्श व्यंजन - क
(C) विवृत स्वर – अ
(D) संघर्षी व्यंजन - आ
(E) लुंठित - ल
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) केवल (A), (D) (2) केवल (A), (B)
(3) केवल (B), (C) (4) केवल (D), (E)

33. सूची-I से सूची -II का मिलान कीजिए: [जनवरी 2025]

सूची-I (उच्चारण)	सूची-II (व्यंजन)
(A) कंठ्य	(I) ट
(B) मूर्धन्य	(II) क
(C) दन्त्य	(III) प
(D) ओष्ट्य	(IV) त

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(IV)
(2) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)
(3) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(III)
(4) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)

34. निम्नलिखित में से कौन से युग्म सही हैं? [जनवरी 2025]
(A) ह्रस्व स्वर – अ
(B) दीर्घ स्वर - इ
(C) दीर्घ स्वर – आ
(D) प्लुत - ई
(E) ह्रस्व स्वर - उ
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) (A), (B), (C) (2) (B), (A), (D)
(3) (A), (C), (E) (4) (C), (B), (D)

35. निम्नलिखित में से कौन-कौन से शब्द स्त्रीलिंग हैं: [जून 2025]
A. भिड़ंत
B. धनिया
C. रेणु
D. बुझौवल
E. रज्जु
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(1) केवल A, C, E (2) केवल B, D
(3) केवल A, D, E (4) केवल B, C

36. भाषा की विशेषताओं के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सत्य है: [जून 2025]

A. भाषा पैतृक सम्पदा है।
B. भाषा परम्परा है, व्यक्ति उसका अर्जन कर सकता है, उसे उत्पन्न नहीं कर सकता।
C. भाषा सूक्ष्मता से स्थूलता और प्रोढ़ता से अप्रोढ़ता की ओर जाती है।
D. प्रत्येक भाषा की एक भौगोलिक सीमा होती है।
E. प्रत्येक भाषा की व्याकरणिक संरचना समान होती है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(1) केवल E, C और A (2) केवल C और A
(3) केवल B और D (4) केवल B, E और D

37. हिंदी ध्वनियों के संबंध में कौन-सा तथ्य सही नहीं है? [जून 2025]

(1) जो दीर्घ से कुछ ह्रस्व हो, उसे प्लुत स्वर कहते हैं.
(2) ध्वनियों का सबसे प्रचलित और प्राचीन वर्गीकरण 'स्वर' और 'व्यंजन' रूप में मिलता है.
(3) स्वर ध्वनि है, जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुख-विवर से निकल जाती है.
(4) व्यंजन वह ध्वनि, जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से नहीं निकल पाती.

38. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें: [जून 2025]

सूची-I	सूची-II
A. जातिवाचक से भाववाचक संज्ञा	I. राष्ट्र- राष्ट्रीय
B. विशेषण से भाववाचक संज्ञा	II. कुरु - कौरव
C. संज्ञा से विशेषण	III. मुनि-मौन
D. व्यक्तिवाचक से अपत्यवाचक संज्ञा	IV. रक्त- रक्तिमा

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(1) A-IV, B-III, C-II, D-I
(2) A-III, B-IV, C-I, D-II
(3) A-1, B-III, C-IV, D-II
(4) A-II, B-III, C-I, D-IV

39. प्रेरणार्थक क्रिया का उदाहरण नहीं है? [जून 2025]

(1) माँ बच्चे को खिलाती है।
(2) पिताजी अपने पुत्र को अध्यापक से पढ़वाते हैं।
(3) आइसक्रीम देखते ही बच्चे उस पर टूट पड़ते हैं।
(4) लड़के ने कपड़ा सिलवाया ।

40. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें: [जून 2025]

सूची-I	सूची-I
A. प्राप्तोदक	I. व्यधिकरण बहुब्रीहि
B. वीणापाणि	II. समानाधिकरण बहुब्रीहि
C. मारामारी	III तुल्ययोग बहुब्रीहि
D. सचेत	IV. व्यतिहार बहुब्रीहि

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(1) A-IV, B-I, C-II, D-III
(2) A-II, B-IV, C-III, D-I
(3) A-II, B-I, C-IV, D-III
(4) A-III, B-II, C-I, D-IV

41. इनमें से कौन सा कथन 'असत्य' है ? [जनवरी 2026]

(1) 'अपभाषा' भाषा का वह रूप है जो परिनिष्ठित एवं शिष्ट भाषा की तुलना में 'विशिष्ट' या 'अतिविशिष्ट' माना जाता है।
(2) जब कोई बोली आदर्श भाषा बनने के बाद उन्नत होकर पूरे राष्ट्र में, अन्य भाषा क्षेत्र तथा अन्य परिवार क्षेत्र में भी सार्वजनिक कार्यों में प्रयुक्त होने लगती है तो वह 'राष्ट्रभाषा' का पद पा जाती है।
(3) पर्यटकों तथा राजनयिकों आदि द्वारा सीमित प्रयोग के लिए सीखी जाने वाली भाषा 'संपूरक' भाषा कहलाती है।
(4) मातृभाषा के साथ-साथ सामाजिक स्तर पर पूरक के रूप में प्रयुक्त होने वाली भाषा ' परिपूरक' कहलाती है।

42. नीचे दिए गए शब्दों को संज्ञा के भेदों के साथ मिलान कीजिए। [जनवरी 2026]

सूची-I को सूची-II से मिलान कीजिए:

सूची-I शब्द	सूची-II संज्ञा के भेद
A. वाराणसी	I. द्रव्यवाचक संज्ञा
B. सोना	II. भाववाचक संज्ञा
C. लड़कपन	III. जातिवाचक संज्ञा
D. जुलाहा	IV. व्यक्तिवाचक संज्ञा

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A-I, B-II, C-III, D-IV (2) A-IV, B-I, C-II, D-III
(3) A-II, B-IV, C-I, D-III (4) A-III, B-I, C-II, D-IV

43. 'किसान लाठी से खेत जोतता है' - इस वाक्य में वाक्य की किस विशेषता का अभाव है ? [जनवरी 2026]

(1) आकांक्षा (2) योग्यता
(3) क्रम (4) संक्षिप्तता

44. सर्वनाम में इनमें से कौन सा ' कारक' नहीं होता? [जनवरी 2026]

(1) संप्रदान (2) अधिकरण
(3) संबोधन (4) संबंध

उत्तर

1. उत्तर (1):

व्याख्या 'कण्ठ्योष्ठ्य' ध्वनियाँ वे हैं जिनके उच्चारण में कंठ और होंठ दोनों का प्रयोग होता है। हिंदी में 'ओ' और **'औ'** स्वर कण्ठ्योष्ठ्य ध्वनियों के उदाहरण हैं। **ए**: यह कण्ठतालव्य स्वर है, जिसका उच्चारण कंठ और तालु के संयोग से होता है। **क**: यह कण्ठ्य व्यंजन है, जिसका उच्चारण केवल कंठ से होता है। **त**: यह दन्त्य व्यंजन है, जिसका उच्चारण जीभ और दाँतों के संयोग से होता है।

2. उत्तर (3):

व्याख्या पद उसे कहा जाता है जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने की योग्यता प्राप्त करता है। **वाक्य**: शब्दों के समूह को, जो पूर्ण अर्थ प्रकट करता है, वाक्य कहते हैं। **ध्वनि**: भाषा की सबसे छोटी इकाई, जिसे उच्चारण किया जा सकता है, ध्वनि कहलाती है। **पद**: शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होने की योग्यता प्राप्त करता है, तो उसे पद कहते हैं। **समास**: दो या दो से अधिक शब्दों के संक्षिप्त और सार्थक रूप को समास कहते हैं।

3. उत्तर (1):
व्याख्या क्य: यह एक **संयुक्त व्यंजन** है, क्योंकि यह "क" और "य" के संयोजन से बना है। यह ध्वनि एक साथ मिलकर एक नई ध्वनि उत्पन्न करती है। **च्च**: द्वित्व व्यंजन हैं। **द्वित्व व्यंजन** वे होते हैं जो **सजातीय व्यंजनों**के योग से बनते हैं। **ट**: यह केवल एक **व्यंजन** है, न कि संयुक्त व्यंजन। **औ**: यह एक **स्वर** है।

4. उत्तर (4):
व्याख्या भाषा निर्माण की इकाइयों का सही अनुक्रम है **ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य**। भाषा की मूलभूत इकाई ध्वनि या स्वन होती है यह भाषा का सबसे प्राथमिक और आवश्यक घटक। ध्वनियों का लिखित रूप वर्ण कहलाता है। **शब्द** - ध्वनियों का मिलाजुला रूप होता है, जो एक अर्थ को व्यक्त करता है। शब्दों का कोई अर्थ हो तो वे सार्थक शब्द कहे जाएंगे, जिन शब्दों का कोई अर्थ न निकले, उन्हें निरर्थक शब्द कहा जाता है। **पद** - शब्दों का संयोजन, जिसमें एक या एक से अधिक शब्द मिलकर कोई विशेष अर्थ व्यक्त करते हैं। **वाक्य** - पदों का संयोजन होता है, जो एक पूर्ण विचार या संदेश व्यक्त करता है। वाक्य में विषय एक संज्ञा या सर्वनाम होता है। वाक्य में विषय और क्रिया जो एक पूर्ण विचार को व्यक्त करते हैं, एक स्वतंत्र खंड बनाते हैं, वाक्य में विषय और क्रिया जो एक पूर्ण विचार को व्यक्त नहीं करते हैं, एक आश्रित खंड बनाते हैं।

5. उत्तर (1):
व्याख्या यह अनुक्रम विभिन्न व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण स्थानों के अनुसार है **कंठ्य** – कंठ (गला) में उच्चारित ध्वनियाँ, जैसे "क", "ख", "ग", "घ"। **तालव्य** – तालू (छोटी तालू) में उच्चारित ध्वनियाँ, जैसे "च", "छ", "ज", "झ"। **वर्त्स्य** – दाँतों के पास उच्चारित ध्वनियाँ, जैसे "ट", "ठ", "ड", "ढ"। **दंत्य** – दाँतों के पास उच्चारित ध्वनियाँ, जैसे "त", "थ", "द", "ध"। **ओष्ठ्य** – ओष्ठ (होंठ) से उच्चारित ध्वनियाँ, जैसे "प", "फ", "ब", "भ"।

6. उत्तर (4):
व्याख्या पूर्ण विराम चिह्न (।) हिन्दी में **अंग्रेज़ी** से नहीं लिया गया है। यह **हिन्दी** की **मूल भाषा संस्कृत** से लिया गया है, जहाँ वाक्य की समाप्ति को सूचित करने के लिए इसका प्रयोग होता था। हिन्दी में भी पूर्ण विराम चिह्न का प्रयोग वाक्य की समाप्ति, विचार की समाप्ति या विचारों के बीच अंतर को सूचित करने के लिए किया जाता है। इसके अलावा, कुछ अन्य **विराम चिह्न** जो **हिन्दी** में **अंग्रेज़ी से लिए गए हैं**। **कौमा (,) यानी अल्पविराम** का प्रयोग वाक्य में छोटे-छोटे रुकावटों को सूचित करने के लिए किया जाता है। जैसे, विचारों को जोड़ने या वाक्य को थोड़ा विराम देने के लिए। उदाहरण: "राम ने घर में प्रवेश किया, और माता ने उसे आशीर्वाद दिया।" **प्रश्नवाचक चिन्ह (?)** का उपयोग वाक्य में पूछे गए सवाल या प्रश्न को चिह्नित करने के लिए किया जाता है। यह अंग्रेज़ी से लिया गया है। उदाहरण: "क्या तुम स्कूल जा रहे हो?" ।**सेमीकोलोन (;)** का प्रयोग वाक्य के दो हिस्सों को जोड़ने के लिए किया जाता है, जब दोनों हिस्से आपस में गहरे तरीके से संबंधित होते हैं। यह भी अंग्रेज़ी से लिया गया है। उदाहरण "मैं पढ़ाई में व्यस्त था; मेरा भाई खेल रहा था।"

7. उत्तर (1):
व्याख्या 'ल' ध्वनि एक **पार्श्विक व्यंजन** है। इसका उच्चारण करते समय **जीभ तालु को छूती है**, लेकिन **हवा मुंह के दोनों बगल (पार्श्व)** से बाहर निकलती है। **हिन्दी** में **केवल 'ल' व्यंजन** पार्श्विक है, यानी अन्य कोई व्यंजन इस श्रेणी में नहीं आता। **अंग्रेज़ी**, **वेल्श** और अन्य भाषाओं में भी **'l' ध्वनियां** पार्श्विक होती हैं। **पार्श्व व्यंजन** में वायुप्रवाह **जीभ के एक या दोनों ओर** से आगे बढ़ता है, जबकि **जीभ मुंह के बीच से वायुप्रवाह को रोक देती है**। **उत्क्षिप्त ध्वनि** वह ध्वनि होती है जिसमें उच्चारण करते समय जीभ का नोक झटके से नीचे गिरता है। **स्वनविज्ञान** में इसे **flap** या **tap** भी कहा जाता है। इस प्रकार की ध्वनियों का उच्चारण किसी अन्य भाग की ओर **जीभ को अचानक फेंकने** से होता है। **'ड़'** और **'ढ़'** जैसे व्यंजन इसके उदाहरण हैं, जिनमें जीभ का नोक तालु से टकरा कर झटका देती है, जिससे यह उत्क्षिप्त ध्वनि उत्पन्न होती है। प्रकम्पित ध्वनियां या लुंठित व्यंजन वे ध्वनियां होती हैं जिनका उच्चारण करते समय वायु जीभ के ऊपर से लुढ़कती हुई बाहर निकलती है। हिन्दी में 'र' की ध्वनि सबसे बड़ा उदाहरण है. इस ध्वनि में जिह्वा का सबसे आगे का भाग कंपकंपाया या थरथराया जाता है।

8. उत्तर (3):
व्याख्या प और फ़ दोनों अघोष ध्वनियां हैं, क्योंकि इनका उच्चारण बिना स्वरयंत्र के कंपन के होता है। जिन ध्वनियों का उच्चारण स्वरतंत्रियों में कंपन के बिना होता है, उन्हें अघोष व्यंजन कहते हैं। प्रत्येक 'वर्ग' का पहला और दूसरा व्यंजन वर्ण अघोष वर्ण होता है, जैसे क, ख, च, छ, ट, ठ, इत्यादि। **ग, घ** , **ड, ढ** , और **द, ध** घोष ध्वनियाँ हैं, क्योंकि इनमें उच्चारण के दौरान स्वरयंत्र में कंपन होता है। जिन वर्णों के उच्चारण में केवल नाद का उपयोग होता है, उन्हें घोष वर्ण कहते हैं।

9. उत्तर (2):
व्याख्या "ण" का उच्चारण **मूर्धा** से होता है, जो कि तालु के थोड़ा पीछे और ऊपर की ओर होता है। यह एक **दंतात्मक** या **कंठीय** ध्वनि है, जिसमें जीभ का अग्रभाग तालु के पास की क्षेत्र में जाता है। ण के अलावा, ट, ठ, ड, ढ, ड़, ष जैसे व्यंजन भी मूर्धा से उच्चारित होते हैं। ण, नासिक्य व्यंजन है। नासिक्य व्यंजन वे व्यंजन होते हैं। जिनके उच्चारण में श्वासवायु नाक से होकर निकलती है।

10. उत्तर (4):
व्याख्या आभ्यन्तर प्रयत्न के अनुसार वर्णों के **पाँच भेद** होते हैं। यह वर्गीकरण उच्चारण के दौरान मुख के आंतरिक प्रयत्न (effort) के आधार पर किया जाता है। ये पाँच भेद इस प्रकार हैं **विवृत, स्पृष्ट, ईषत् विवृत, ईषत् स्पृष्ट, संवृत्**। ध्वनि बनने से पहले वागिंद्रिय की क्रिया को आभ्यंतर प्रयत्न कहते हैं। **विवृत** जिनके उच्चारण में वागिंद्रिय खुली रहती है, जैसे स्वर। **स्पृष्ट** जिनके उच्चारण में वागिंद्रिय का द्वार बंद रहता है, जैसे 'क' से 'म' तक के 25 व्यंजन। **ईषत् विवृत** जिनके उच्चारण में वागिंद्रिय कुछ खुली रहती है, जैसे य, र, ल, व। **ईषत् स्पृष्ट**

थोड़ा स्पर्श या छुआ गया श, ष, स, ह। **संवृत** वर्णों के उच्चारण काल में फेफड़े से निकलने वाले निःश्वास का मार्ग जब बंद रहता है, तब इसे संवृत कहते हैं. इसका प्रयोग केवल ह्रस्व 'अ' के उच्चारण में होता है।

11. उत्तर (3):

→ **व्याख्या:** 'तौलिया' शब्द मूलतः **पुर्तगाली भाषा** के 'toalha' से हिंदी में आया है। यह एक विदेशी शब्द है जो हिंदी में अंगोछा या स्नान के बाद शरीर पोंछने के कपड़े के रूप में प्रयोग होता है। अन्य देशों की भाषाओं से हिन्दी में आए शब्दों को विदेशी शब्द कहा जाता है. इनमें से कुछ भाषाएं ये हैं: अरबी, फ़ारसी, तुर्की, उर्दू, अंग्रेज़ी, पुर्तगाली। शब्दों के प्रकार: तत्सम शब्द - संस्कृत से ज्यों के त्यों लिए गए शब्द। तद्भव शब्द - संस्कृत से हिन्दी में आने पर जिन शब्दों का रूप बदल गया हो। देशज शब्द - देश की अन्य या क्षेत्रीय भाषा से हिन्दी में सम्मिलित हुए शब्द।

12. उत्तर (2):

→ **व्याख्या:** संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य में उसका संबंध किसी अन्य शब्द (विशेषतः क्रिया) के साथ प्रकट होता है, उसे **कारक** कहते हैं। यह वाक्य में कर्ता, कर्म, करण आदि भूमिकाओं को स्पष्ट करता है। हिंदी में कारक के सात भेद होते हैं, जैसे कर्ता (कार्य करने वाला), कर्म (जिस पर कार्य होता है), और करण (जिस माध्यम से कार्य होता है)। अन्य विकल्प जैसे "विकृत अव्यय", "सम्बन्धसूचक", और "क्रियाविशेषण" इस परिभाषा में नहीं आते। सही **उत्तर (2): कारक** है।

13. उत्तर (3):

→ **व्याख्या: सिफ़ारिश'** शब्द हिंदी में **अरबी भाषा** से आया है। इसका अर्थ है किसी के पक्ष में कुछ कहना या किसी का कार्य सिद्ध करने के लिए किसी से अनुरोध करना। यह शब्द उर्दू और फ़ारसी भाषाओं में भी प्रचलित है, लेकिन इसकी मूल उत्पत्ति अरबी भाषा में है।हिंदी में अरबी भाषा से आए कुछ प्रचलित शब्द निम्नलिखित हैं- **अदालत, अदब, औरत, अक्ल, अलमारी।**

14. उत्तर (2):

→ **व्याख्या: मिश्र वाक्य** ऐसा वाक्य होता है जिसमें एक मुख्य वाक्य और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, जिन्हें संयोजक अव्ययों (जैसे कि, यदि, क्योंकि, इसलिए, ताकि) द्वारा जोड़ा जाता है। इस वाक्य का विश्लेषण- **मुख्य वाक्य:** 'इस मेले का मुख्य उद्देश्य है', **आश्रित उपवाक्य:** 'कि व्यापार की वृद्धि हो', **संयोजक अव्यय:** 'कि'। अत: सही **उत्तर (2): मिश्र वाक्य** है। **साधारण वाक्य** वह होता है जिसमें एक ही कर्ता (उद्देश्य) और एक ही क्रिया (विधेय) होती है। इसमें केवल एक क्रिया होती है, जो कारकों के साथ मिलकर वाक्य को पूरा करती है। उदाहरण: 'राम खेल रहा है।' **संयुक्त वाक्य** वह होता है जिसमें दो या दो से अधिक स्वतंत्र साधारण वाक्य या प्रधान उपवाक्य समुच्चयबोधक अव्ययों (जैसे 'और', 'या', 'लेकिन', 'किंतु', 'अथवा', 'इसलिए' आदि) द्वारा जुड़े होते हैं।

15. उत्तर (1):

व्याख्या- '**पीला**' शब्द रूढ़ शब्द है, जबकि 'झटपट' और 'घुड़साल' यौगिक शब्द हैं तथा 'पंकज' योगरूढ़ शब्द है। **रूढ़ शब्द**: वे शब्द जो स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में होते हैं और जिनके खंड करने पर कोई सार्थक अर्थ नहीं निकलता। उदाहरण: 'पीला' (जिसे 'पी' और 'ला' में विभाजित करने पर कोई अर्थ नहीं मिलता)। **यौगिक शब्द**: वे शब्द जो दो या दो से अधिक सार्थक शब्दों या शब्दांशों के मेल से बनते हैं। उदाहरण: 'घुड़साल' ('घोड़ा' + 'साल')। **योगरूढ़ शब्द**: वे शब्द जो यौगिक होते हुए भी किसी विशेष अर्थ के लिए प्रसिद्ध हो जाते हैं। उदाहरण: 'पंकज' ('पंक' + 'ज'), जिसका शाब्दिक अर्थ 'कीचड़ में जन्मा' है, लेकिन यह 'कमल' के लिए रूढ़ हो गया है।

16. उत्तर (1):

व्याख्या 'दाग' शब्द **फ़ारसी भाषा** से हिंदी में आया है। **दाग**: फ़ारसी मूल का शब्द, जिसका अर्थ है 'धब्बा' या 'निशान'। **औरत**: अरबी भाषा से लिया गया शब्द, जिसका अर्थ है 'महिला' या 'स्त्री'। **नीलम**: संस्कृत शब्द 'नीलमणि' से व्युत्पन्न, जिसका अर्थ है 'नीला रत्न'। **फीस**: अंग्रेज़ी शब्द 'fee' से लिया गया, जिसका अर्थ है 'शुल्क' या 'फीस'।

17. उत्तर (4):

व्याख्या दन्त्य व्यंजन वे हैं जिनका उच्चारण करते समय जीभ दांतों को स्पर्श करती है। हिंदी वर्णमाला में दन्त्य व्यंजन- **त, थ, द, ध, न। 'ड'** तथा **'ढ'** मूर्धन्य व्यंजन हैं। अन्य मूर्धन्य व्यंजनों में **ट, ठ, ड़, ढ़, ण, ष** आते हैं।

18. उत्तर (4):

व्याख्या तद्भव शब्द: वे शब्द हैं जो संस्कृत से बदलते हुए प्राकृत, अपभ्रंश के माध्यम से हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में आए हैं और उनके मूल स्वरूप में परिवर्तन हो चुका है। **तत्सम शब्द**: वे शब्द हैं जो संस्कृत से सीधे लिए गए हैं और अपने मूल स्वरूप में हैं। विकल्प में - **राय** (तद्भव): संस्कृत के "राज" शब्द से विकसित हुआ है। **खेत** (तद्भव): संस्कृत के "क्षेत्र" शब्द से आया है। **दाहिना** (तद्भव): संस्कृत के "दक्षिण" से बदला हुआ है। **कवि** (तत्सम): यह संस्कृत शब्द है और अपने मूल स्वरूप में ही हिंदी में प्रयुक्त होता है। इसलिए, **"कवि" तद्भव शब्द नहीं** है।

19. उत्तर (4):

व्याख्या तद्भव शब्द: वे शब्द हैं जो संस्कृत से बदलते हुए प्राकृत, अपभ्रंश के माध्यम से हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में आए हैं और उनके मूल स्वरूप में परिवर्तन हो चुका है। **तत्सम शब्द**: वे शब्द हैं जो संस्कृत से सीधे लिए गए हैं और अपने मूल स्वरूप में हैं। विकल्प में - **राय** (तद्भव): संस्कृत के "राज" शब्द से विकसित हुआ है। **खेत** (तद्भव): संस्कृत के "क्षेत्र" शब्द से आया है। **दाहिना** (तद्भव): संस्कृत के "दक्षिण" से बदला हुआ है। **कवि** (तत्सम): यह संस्कृत शब्द है और अपने मूल स्वरूप में ही हिंदी में प्रयुक्त होता है। इसलिए, **"कवि" तद्भव शब्द नहीं** है।

20. उत्तर (4):

व्याख्या तत्सम शब्द वे होते हैं जो संस्कृत से सीधे हिंदी में आए हैं और अपने मूल रूप में बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग होते हैं। दूसरी ओर, तद्भव शब्द वे हैं जो संस्कृत से हिंदी में आते समय ध्वनि, उच्चारण या रूप में परिवर्तन के साथ

अपनाए गए हैं। प्रस्तुत विकल्पों का विश्लेषण करने पर- **आग**: यह 'अग्नि' शब्द का तद्भव रूप है। **बयार**: यह 'वात' या 'वायु' का तद्भव रूप है। **पंख**: यह 'पक्ष' का तद्भव रूप है। **अक्षर**: यह संस्कृत से सीधे लिया गया तत्सम शब्द है, जिसका अर्थ है 'वर्ण' या 'अक्षर'। अतः, इन विकल्पों में से **'अक्षर'** एक तत्सम शब्द है।

21. उत्तर (3):

व्याख्या सही विकल्प है: 3. A-IV, B-I, C-II, D-III। **महाप्राण ध्वनि - ख,**महाप्राण ध्वनियाँ वे होती हैं जिनके उच्चारण में श्वास अधिक मात्रा में निकलती है और 'ह' जैसी ध्वनि सुनाई देती है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण महाप्राण होता है, जैसे: ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ। **घोष ध्वनि - ज,** घोष ध्वनियाँ वे हैं जिनके उच्चारण में स्वरतंत्रियाँ (वोकल कॉर्ड्स) कंपन करती हैं। प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ वर्ण घोष होता है, जैसे: ग, घ, ङ; ज, झ, ञ; ड, ढ, ण; द, ध, न; ब, भ, म। स्वर वर्ण, य, र, ल, व और ह भी घोष ध्वनियाँ हैं।**पार्श्विक व्यंजन - ल,** पार्श्विक व्यंजन वे होते हैं जिनके उच्चारण में जीभ के मध्य भाग को तालु से सटाकर रखा जाता है, जिससे वायु जीभ के किनारों से बाहर निकलती है। हिन्दी में 'ल' एकमात्र पार्श्विक व्यंजन है। **लोड़ित व्यंजन - र,** लोड़ित व्यंजन वे होते हैं जिनके उच्चारण में जीभ की नोक को ऊपर की ओर मोड़कर उच्चारण किया जाता है। हिन्दी में 'र' लोड़ित व्यंजन है।

22. उत्तर (3):

व्याख्या कथन-I सत्य है, जबकि कथन-II असत्य है। **कथन-I:** 'गिरिधर' बहुव्रीहि समास का उदाहरण है। **कथन-II:** 'रामकृष्ण' तत्पुरुष समास का उदाहरण है। **विश्लेषण: 'गिरिधर' (गिरि + धर):** इसका अर्थ है 'जो गिरि (पर्वत) को धारण करता है', जो भगवान श्रीकृष्ण का एक नाम है। यह बहुव्रीहि समास का उदाहरण है, क्योंकि यह समास किसी तीसरे व्यक्ति (श्रीकृष्ण) का बोध कराता है। **'रामकृष्ण' (राम + कृष्ण):** यह द्वंद्व समास का उदाहरण है, जिसमें दोनों पद समान महत्व रखते हैं और 'राम तथा कृष्ण' का बोध कराते हैं।

23. उत्तर (4):

व्याख्या अतः, सही उत्तर है: **4. क्रियाविशेषण**। अविकारी शब्द, जिन्हें अव्यय भी कहा जाता है, वे शब्द होते हैं जिनमें लिंग, वचन, पुरुष या कारक के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता। दूसरे शब्दों में, ये शब्द अपने रूप में स्थिर रहते हैं और इनमें कोई विकार नहीं आता। **अविकारी शब्दों के प्रमुख भेद: क्रियाविशेषण (Adverb):** वे शब्द जो क्रिया की विशेषता बताते हैं। उदाहरण: धीरे-धीरे, तेज, आज, कल, यहाँ, वहाँ आदि। **समुच्चयबोधक (Conjunction):** वे शब्द जो दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं। उदाहरण: और, या, लेकिन, क्योंकि, तथा आदि। **संबंधबोधक (Preposition):** वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम के साथ अन्य शब्दों का संबंध बताते हैं। उदाहरण: के ऊपर, के नीचे, के पास, के बिना आदि। **विस्मयादिबोधक (Interjection):** वे शब्द जो हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा आदि भावों को व्यक्त करते हैं। उदाहरण: अरे!, वाह!, हाय!, ओह! आदि। दिए गए विकल्पों में से, **क्रियाविशेषण (Adverb)** एक अविकारी शब्द है।

24. उत्तर (3):

व्याख्या अर्ध-संवृत स्वर वे स्वर होते हैं जिनके उच्चारण के दौरान मुख द्वार कम खुलता है। हिन्दी में **'ए' और 'ओ'** ऐसे अर्ध-संवृत स्वर हैं। इसलिए, दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर विकल्प 3: 'ए' और 'ओ' है। स्वरों के उच्चारण के दौरान मुख के खुलने की मात्रा के आधार पर उन्हें चार श्रेणियों में विभाजित किया जाता है: **संवृत स्वर:** इन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार बहुत कम खुलता है। उदाहरण: 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ'। **अर्ध-संवृत स्वर:** इनके उच्चारण में मुख द्वार संवृत स्वरों की तुलना में थोड़ा अधिक खुलता है। उदाहरण: 'ए', 'ओ'। **अर्ध-विवृत स्वर:** इन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार अर्ध-संवृत स्वरों की तुलना में अधिक खुलता है, लेकिन पूरी तरह नहीं। उदाहरण: 'ऐ', 'औ'। **विवृत स्वर:** इनके उच्चारण में मुख द्वार पूरी तरह खुला होता है। उदाहरण: 'आ'। इस प्रकार, मुख के खुलने की मात्रा के अनुसार स्वर विभाजित होते हैं, जो उनके उच्चारण में भिन्नता लाते हैं।

25. उत्तर (3):

व्याख्या स्वनिम (Phoneme) किसी भाषा की उच्चारित ध्वनि की सबसे छोटी अर्थभेदक इकाई है। यह उच्चरित भाषा की लघुत्तम इकाई है और इसका संबंध मौखिक भाषा से है। स्वनिम का ज्ञान भाषा के शुद्ध उच्चारण को जानने में सहायक होता है। हालांकि, स्वनिम वाक्य में शब्दों के संबंध निर्धारित नहीं करते; यह कार्य व्याकरण और वाक्यविन्यास का होता है। सार्थकता की दृष्टि से शब्द नहीं, बल्कि स्वनिम लघुत्तम इकाई है। इस प्रकार, दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर है: 3.केवल B, D और E

26. उत्तर (2):

व्याख्या आकारांत एकवचन पुल्लिंग संज्ञाओं के विकृत रूप में 'ए' प्रत्यय का उपयोग होता है। यह नियम हिंदी और उर्दू (तद्भव) आकारांत पुल्लिंग संज्ञाओं पर लागू होता है। उदाहरण के लिए: लड़का - लड़के ने, घोड़ा - घोड़े ने, सोना - सोने का, परदा - परदे में। इन उदाहरणों में, मूल संज्ञा 'लड़का', 'घोड़ा', हैं, जो 'आ' (ा) पर समाप्त होती हैं। इनके विभक्ति रूपों में 'आ' (ा) के स्थान पर 'ए' (े) का प्रयोग किया गया है, जैसे 'लड़के', 'घोड़े'।

27. उत्तर (1):

व्याख्या प, फ, ब, भ: ये व्यंजन ओष्ठ (ओठ) से उच्चारित होते हैं, जिन्हें **द्वयोष्ठ्य व्यंजन** कहा जाता है। **न, न्ह, ल, ल्ह:** ये व्यंजन दंत (दाँत) और ओष्ठ (ओठ) के संयोग से उच्चारित होते हैं, जिन्हें **वर्त्स्य व्यंजन** कहा जाता है। **क, ख, ग, घ:** ये व्यंजन कण्ठ (गला) से उच्चारित होते हैं, जिन्हें कण्ठ्य व्यंजन कहा जाता है। **ये ध्वनियाँ कोमल तालु का सहारा भी लेती हैं। च, छ, ज, झ:** ये व्यंजन तालु (तालु का अग्र भाग) से उच्चारित होते हैं, जिन्हें **तालव्य व्यंजन** कहा जाता है। **अत: सही विकल्प 1. A-III, B-I, C-II, D- IV है।**

28. उत्तर (2):

व्याख्या हिन्दी की वर्तनी तथा शब्द-विश्लेषण किताब, आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने लिखी थी। आचार्य

किशोरीदास वाजपेयी हिन्दी के प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य थे। उन्होंने हिन्दी की खड़ी बोली के व्याकरण को वैज्ञानिक दृष्टि से विकसित किया। वाजपेयी ने हिन्दी को परिष्कृत रूप देने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने हिन्दी के व्याकरण को सुव्यवस्थित किया और नए मानदंड स्थापित किए. इसीलिए उन्हें 'हिन्दी का पाणिनी' कहा जाता है। पुस्तक के अध्यायों का क्रम निम्नलिखित है: **हिन्दी की कुछ क्रियाएँ नाम, नाम: यानी संज्ञाएँ, हिन्दी में अनुनासिक वर्ण और अनुस्वार, समास में वर्तनी की स्थिति, वाक्य विन्यास में वर्तनी का विवेचन। इस क्रम के अनुसार, सही विकल्प है: 2. C, D, E, A, B।**

29. उत्तर (1):

व्याख्या कामता प्रसाद गुरु ने **सार्वनामिक विशेषण** को व्युत्पत्ति के आधार पर **दो** भेदों में वर्गीकृत किया। यह वर्गीकरण विशेषण के उपयोग और उनके मूल अर्थ की प्रकृति को समझने में सहायक होता है। **कामता प्रसाद गुरु** ने हिंदी व्याकरण में व्युत्पत्ति और अर्थ के आधार पर शब्दों को वर्गीकृत करने का प्रयास किया। उनके अनुसार, **सार्वनामिक विशेषण** को व्युत्पत्ति के आधार पर **दो प्रमुख भेदों** में बाँटा जा सकता है: **परिशिष्ट विशेषण:** ये विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के साथ जुड़े हुए होते हैं और उनके अर्थ को अधिक स्पष्ट करते हैं। इन्हें "संपर्कवाचक" भी कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए, "यह", "वह", "कौन सा", "कितना" जैसे शब्द संज्ञा के बारे में अतिरिक्त जानकारी देते हैं। **व्यक्तिगत विशेषण:** इनका सीधा संबंध व्यक्ति या वस्तु की पहचान से होता है, और ये संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, "यह लड़का", "वह पुस्तक"।

30. उत्तर (2):

व्याख्या सही उत्तर: (2) ओ। अर्ध-संवृत स्वर वे स्वर होते हैं जिनके उच्चारण के समय मुखमंडल आंशिक रूप से खुला रहता है। हिन्दी में 'ए' और 'ओ' अर्ध-संवृत स्वरों के उदाहरण हैं। इन स्वरों के उच्चारण में मुख न पूरी तरह खुलता है और न ही पूरी तरह बंद रहता है, बल्कि बीच की स्थिति में होता है। हिन्दी स्वरों का वर्गीकरण मुख के खुलने की मात्रा के आधार पर किया जाता है। मुख के खुलने की विभिन्न अवस्थाओं के अनुसार स्वरों को चार श्रेणियों में बांटा गया है: **संवृत स्वर:** इन स्वरों के उच्चारण के समय मुख लगभग बंद रहता है। उदाहरण: 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ'। **अर्ध-संवृत स्वर:** इनके उच्चारण में मुख संवृत स्वरों की तुलना में थोड़ा अधिक खुलता है। उदाहरण: 'ए', 'ओ'। **अर्ध-विवृत स्वर:** इन स्वरों के उच्चारण के दौरान मुख आधा खुला रहता है। उदाहरण: 'अ', 'ऐ', 'औ'। **विवृत स्वर:** इनके उच्चारण में मुख पूरी तरह खुला रहता है। उदाहरण: 'आ'।

31. उत्तर (3):

व्याख्या कारक हिंदी व्याकरण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के क्रिया से संबंध को स्पष्ट करता है। कारकों का सही अनुक्रम निम्नलिखित है: **करण कारक (B)** – जिससे क्रिया संपन्न होती है (उपकरण, साधन, कारण)। जैसे: चाकू से फल काटा। **संप्रदान कारक (A)** – जिसके लिए या जिसे क्रिया दी जाती है। जैसे: राम ने मोहन को पुस्तक दी। **अपादान कारक (D)** – अलग होने या दूर होने को दर्शाने वाला कारक। जैसे: पेड़ से पत्ता गिरा। **संबंध कारक (E)** – संबंध प्रकट करने वाला कारक। जैसे: राम का घर बहुत बड़ा है। **अधिकरण कारक (C)** – जहां पर क्रिया संपन्न होती है। जैसे: कक्षा में पढ़ाई हो रही है। अतः सही उत्तर विकल्प **(3)** होगा।

32. उत्तर (2):

व्याख्या प्रस्तुत विकल्पों में से सही युग्म हैं: **संवृत्त स्वर – उ** संवृत्त स्वर वे होते हैं जिनके उच्चारण के समय मुख अधिक बंद रहता है। 'उ' का उच्चारण करते समय मुख अपेक्षाकृत कम खुलता है, इसलिए 'उ' संवृत्त स्वर है। **स्पर्श व्यंजन – क** स्पर्श व्यंजन वे होते हैं जिनके उच्चारण के दौरान वायु का मार्ग अवरुद्ध होता है और फिर उसे छोड़ दिया जाता है। 'क' का उच्चारण करते समय जीभ का पिछला भाग कंठ के ऊपरी हिस्से को स्पर्श करता है, इसलिए 'क' एक स्पर्श व्यंजन है। **अ एक विवृत स्वर नहीं है**, अ एक अर्ध विवृत स्वर है, विवृत स्वरों में जिह्वा को मुंह में जितना हो सके नीचे और तालू से दूर रखा जाता है, वहीं, अर्ध विवृत स्वरों में मुंह अधखुला होता है। **संघर्षी व्यंजन – आ** संघर्षी व्यंजन वे होते हैं जिनके उच्चारण के दौरान वायु का मार्ग संकीर्ण हो जाता है, जिससे घर्षण उत्पन्न होता है। 'आ' एक स्वर है, व्यंजन नहीं, इसलिए यह युग्म गलत है। **लुंठित – ल** लुंठित (फ्लैप) ध्वनियाँ वे होती हैं जिनके उच्चारण के दौरान जीभ का अग्रभाग तालू को स्पर्श करता है। हिंदी में 'ल' एक पार्श्विक (लैटरल) व्यंजन है, न कि लुंठित, इसलिए यह युग्म गलत है।

33. उत्तर (2):

व्याख्या सूची-I और सूची-II का मिलान इस प्रकार है: **कंठ्य (A)**: 'क' (क, ख, ग, घ, ङ), **मूर्धन्य (B)**: 'ट' (ट, ठ, ड, ढ, ण), **दन्त्य (C)**: 'त' (त, थ, द, ध, न), **ओष्ठ्य (D)**: 'प' (प, फ, ब, भ, म)। **तालव्य:** च, छ, ज, झ, ञ, य, श, इ, ई, **दन्तोष्ठ्य:** व, **अनुनासिक:** ङ, ञ, ण, न, म, **अनुनासिक (नाक):** नाक से उच्चरित ध्वनियाँ अनुनासिक कहलाती हैं।

34. उत्तर (3):

व्याख्या सही युग्म (A), (C), और (E) हैं। अतः विकल्प (3) सही उत्तर है। **ह्रस्व स्वर**: जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इनमें शामिल हैं: **अ**, इ, **उ**, ऋ। **दीर्घ स्वर**: जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनमें शामिल हैं: **आ**, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। **प्लुत स्वर**: जिन स्वरों के उच्चारण में तीन मात्राओं का समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुत स्वरों का प्रयोग मुख्यतः वैदिक मंत्रों में होता है, जैसे 'ओ३म्' में 'ओ' का उच्चारण प्लुत होता है।

35. उत्तर (1)

व्याख्या दिए गए शब्दों में, निम्नलिखित शब्द स्त्रीलिंग हैं: **भिड़ंत:** यह एक स्त्रीलिंग शब्द है। उदाहरण: 'दोनों गाड़ियों में भिड़ंत हो गई।' **धनिया:** यह एक पुल्लिंग शब्द है। उदाहरण: 'धनिया बहुत महंगा है।' **रेणु:** यह एक स्त्रीलिंग शब्द है। इसका अर्थ धूल या धूल का कण होता है। उदाहरण: 'रेणु उड़ रही है।' **E. रज्जु:** यह एक स्त्रीलिंग शब्द है। इसका